।। ओ३म् ।।

# आर्यावर्त केसरी

विश्व भर में भारतीय संस्कृति का उद्घोषक पाक्षिक

वार्षिक शुल्क : 100/-
आजीवन : 1100/-
(विदेश में) 5 वर्ष के 35 डॉलर

आर.एन.आई.सं.
UP HIN/2002/7589
पोस्टल रजि. सं.
U.P./MBD-64/2013-16
दयानन्दाब्द १९१,
सृष्टि सं.-१९६०८५३११५

वर्ष-13 / अंक-24 / चैत्र शु. 12 से बैसाख कृ. 11 सं. 2072 वि. / 1 से 15 अप्रैल 2015 / अमरोहा (उ.प्र.) / पृ.- 12 / प्रति- 5/-

## वैवाहिक परिचय सम्मेलन ३ को

**दिल्ली।** दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में 11वां वैवाहिक आर्य युवक-युवती परिचय सम्मेलन 3 मई 2015 को आर्य समाज विवेक विहार, नई दिल्ली में आयोजित किया जाएगा। कार्यक्रम संयोजक ने समस्त आर्य परिवारों से अपने विवाह योग्य हो चुके पुत्र-पुत्रियों एवं संबन्धियों का पंजीकरण कराने की अपील की है। पंजीकरण की अंतिम तिथि 20 अप्रैल है। रजिस्ट्रशन फार्म www.thearyasamaj.org से भी डाउनलोड किया जा सकता है। रजिस्ट्रेशन शुल्क मात्र 200/- रुपये है। सम्मेलन स्थल पर तत्काल पंजीकरण की भी सुविधा उपलब्ध होगी।

**पृष्ठ ८ पर पढ़ें**

**इन्हें कौन नहीं जानता?**

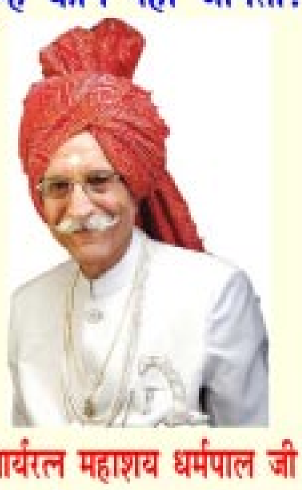

**आर्यरत्न महाशय धर्मपाल जी**
**27 मार्च 2015 : जन्म दिवस पर**
**हार्दिक शुभकामनाएं**

**डॉ. सुनील कुमार जोशी**

**मर्म विज्ञान चिकित्सा पर विशेष सामग्री**

**नव संवत्सर एवं**
**आर्यसमाज स्थापना दिवस**
**चैत्र शुक्ल प्रतिपदा**
**संवत् २०७२ विक्रमी**
**के उपलक्ष्य में**
**हार्दिक शुभकामनाएं**
-सम्पादक

### टंकारा में ऋषि बोधोत्सव पर आर्यजनों ने लिया दृढ़ संकल्प

# घर-घर पहुंचाएंगे वेद और सत्यार्थ प्रकाश

**रामनाथ सहगल**
टंकारा (राजकोट) गुजरात।

टंकारा में आयोजित ऋग्वेद पारायण यज्ञ में आहुतियां प्रदान करते यजमान- केसरी।

ऋषि जन्मभूमि टंकारा में ऋषि बोधोत्सव हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। 16 फरवरी को यज्ञ के साथ कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। उद्घाटन समारोह में केन्द्रीय कृषि राज्यमंत्री मोहन भाई कुंडारिया मुख्य अतिथि के रूप में पधारे। उन्होंने कहा कि टंकारा ट्रस्ट के प्रति मेरी अपार श्रद्धा है। टंकारा ट्रस्ट द्वारा आयोजित समारोह में दूसरे दिन गुजरात के राज्यपाल ओमप्रकाश कोहली मुख्य अतिथि के रूप में सपत्नीक पधारे। ट्रस्ट की ओर से वाचोनिधि आर्य ने उन्हें कच्छ की पगड़ी एवं शॉल ओढ़ाकर सम्मानित किया। इस अवसर पर डॉ0 विनय विद्यालंकार, डॉ0 वल्लभ भाई कथीरिया, सुरेश चन्द्र अग्रवाल, स्वामी शान्तानन्द, स्वामी प्रवासानन्द, स्वामी आर्येशानन्द सरस्वती, कुलदीप शास्त्री, सुनीता आदि सहित देश को कोने-कोने से पधारे आर्य प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

इस अवसर पर एस. के. शर्मा ने डीएवी के प्रधान पूनम सूरी द्वारा भेजा गया संदेश पढ़कर सुनाया, जिसमें वेदों और सत्यार्थ प्रकाश को जन-जन तक पहुंचाने की ओर संगठित रूप से कार्य करने की प्रेरणा दी गयी। डॉ0 विनय विद्यालंकार ने कहा कि गुरुकुलों को एक बड़ी संस्था के अधीन लाने की आवश्यकता है। और आज के परिप्रेक्ष्य में आधुनिक विज्ञान के माध्यम से शिक्षा के साथ गुरुकुलीय पद्धति से पढ़े हुए संस्कारित ब्रह्मचारियों की आवश्यकता है। अन्त में महामहिम राज्यपाल ओमप्रकाश कोहली ने अपने वक्तव्य में कहा कि आज भारत की नारी हर क्षेत्र में प्रगति कर रही है। इसका श्रेय स्वामी दयानन्द को जाता है। स्वामी जी द्वारा सती प्रथा, बाल विवाह, रूढ़िवादिता, पाखण्ड जैसी कुप्रथाओं को समाप्त करने में योगदान दिया। अत: आर्य समाज विशेषकर इस जन्मभूमि का दायित्व बढ़जाता है कि उनके अधूरे सपनों को पूर्ण किया जाए।

17 फरवरी को यज्ञ की पूर्णाहुति के अवसर पर हीरो होण्डा ग्रुप के योगेश मुंजाल, सुधीर मुंजाल, अंजु मुंजाल आदि यजमान उपस्थित थे। शोभायात्रा से पूर्व एसके शर्मा द्वारा ध्वजारोहण किया गया। इस मौके पर सत्यपाल पथिक ने ध्वजगीत गाया।

केन्द्रीय कृषि राज्यमंत्री मोहन भाई कुंडारिया का स्वागत करते आर्यावर्त केसरी के सम्पादक डॉ० अशोक कुमार आर्य - केसरी।

आर्यजनों ने इस समारोह की व्यवस्था एवं भव्यता आदि सभी दृष्टियों से यादगार बताया। टंकारा ट्रस्ट की ओर से किया गया आतिथ्य भी निश्चय ही सराहनीय रहा। स्वयंसेवकों में सेवाभाव देखते ही बनता था। वैदिक व आध्यात्मिक चिन्तन, योग, प्राणायाम, सारगर्भित व्याख्यान आदि से लेकर जलपान, भोजन एवं आवासीय आदि सभी व्यवस्थाएं उच्च कोटि की रहीं। इसके लिए निश्चय ही टंकारा ट्रस्ट के अजय सहगल सहित टंकारा महाविद्यालय के स्वामी आचार्य रामदेव व अन्य ट्रस्टीगण विशेष रूप से बधाई के पात्र हैं।

## नोबेल पुरस्कार विजेता कैलाश सत्यार्थी से अर्जुनदेव चड्ढा ने की मुलाकात

कैलाश सत्यार्थी के साथ कोटा के अर्जुनदेव चड्ढा- केसरी।

**अरविन्द पाण्डेय**
**दिल्ली।**

कोटा के समाजसेवी व आर्य समाज के जिला प्रधान अर्जुन देव चड्ढा ने शांति नोबेल पुरस्कार से सम्मानित कैलाश सत्यार्थी से दिल्ली में उनके कार्यालय में मुलाकात कर, आर्यसमाज द्वारा कोटा में किये जा रहे समाजसेवा के कार्यों की जानकारी दी। श्री चड्ढा के पुत्र राकेश चड्ढा भी उनके साथ थे।

श्री सत्यार्थी ने पुरानी यादों को ताजा करते हुए कहा कि मुझे इस बात की प्रसन्नता है कि आप मेरे वो मित्र हैं, जिनका मुझे दिल्ली- दिवराला सती विरोधी यात्रा, रामगंज मण्डी में बंधुआ मुक्ति मोर्चा आन्दोलन व कोटा में आयोजित नशा मुक्ति व बालश्रम तथा अन्य कार्यों में साथ मिला।

मुलाकात के दौरान चड्ढा ने श्री सत्यार्थी को कोटा आने का निवेदन भी किया।

## संक्षिप्त समाचार

### अंतरंग की बैठक 5 को

लखनऊ। आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश की अंतरंग सभा की बैठक आगामी 5 अप्रैल, दिन रविवार को प्रातः 11 बजे आर्य समाज चौक (प्रयाग) रूपवानी सिनेमा के सामने इलाहाबाद में सम्पन्न होगी। यह जानकारी प्रधान देवेन्द्र पाल वर्मा तथा मंत्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती द्वारा जारी विज्ञाप्ति में दी गयी है।

### याज्ञिक विवेक नहीं रहे

हापुड़ (सुमन कुमार वैदिक)। ब्रह्मचारी कृष्णदत्त जी की प्रेरणा से नित्य वेदमंत्रों से यज्ञ करने वाले हापुड़ निवासी विवेक त्यागी का आकस्मिक निधन १२ फरवरी को 45 वर्ष की अवस्था में हो गया। अपने पीछे पत्नी तथा दो पुत्रों को छोड़ गये हैं। परमात्मा उनके परिवार को ऐसे कठिन समय में दारुण दुख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

### सवा लाख गायत्री मंत्र से किया महायज्ञ

नजीबाबाद (सुमनकुमार वैदिक)। पर्यावरण संरक्षण राष्ट्रोन्नयन एवं आत्मोत्थान हेतु सवा लाख गायत्री मंत्र का महायज्ञ गुरुकुल आर्ष कन्या विद्यापीठ नजीबाबाद में 5 मार्च को प्रारम्भ हुआ, जिसका समापन रामनवमी २८ मार्च को भव्यता के सथ हुआ। इस महायज्ञ के मुख्य यजमान दीपचन्द्र आर्य, विजय गोयल, संतोष बाला रहे, तथा पौरोहित्य आचार्या डॉ० प्रियंवदा वेदभारती के द्वारा किया गया।

### 53वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

ग्रेटर नाएडा (मूलचन्द्र शर्मा)। आर्य समाज सूरजपुर का 53वां वार्षिकोत्सव २१ से २३ मार्च तक आर्यसमाज मन्दिर, सूरजपुर में अथर्ववेद महायज्ञ के साथ धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर डॉ० महेश शर्मा (मंत्री-भारत सरकार), डॉ० सत्यपाल सिंह मलिक (सांसद-बागपत) एवं नवाब सिंह नागर (पूर्व मंत्री) विशेष रूप से उपस्थित थे।

### साहित्यिक सूचना

पुस्तक 'संघर्ष पथ' लेखक-कवि मुकेश कुमार 'ऋषि वर्मा', निम्न पते से मुफ्त प्राप्त करें-

ऋषि वैदिक साहित्य पुस्तकालय
संचालक-मुकेश कुमार
ग्रा०- रिहावली
(तारौली गूजर)
फतेहाबाद (आगरा)
उ०प्र०
पिन- २83111

# सामवेद महायज्ञ के साथ पुस्तकालय का उद्घाटन

सुमनकुमार वैदिक
सलीमाबाद (गाजियाबाद)।

ब्रह्मचारी कृष्णदत्त जी की जन्मस्थली पर ग्रामीणों के सहयोग से 13 से 15 मार्च तक सामवेद पारायण यज्ञ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर जहां भव्य पुस्तकालय का उद्घाटन हुआ, वहीं भव्य यज्ञशाला बनाने का संकल्प भी लिया गया।

यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य अरविन्द शास्त्री तथा वेदपाठी ब्रह्ममुनि किंकर, आचार्य विजयपाल, ब्रह्मचारी रोहित, सत्यवेश, अंकुर आदि रहे।

इस अवसर पर बोलते हुए आचार्य अरविन्द शास्त्री ने कहा कि भौतिक विष्णु राजा बनने से हम एक राष्ट्र को ही विजय कर सकते हैं, परन्तु जब आध्यात्मिक विष्णु बन जाते हैं, तो संसार को विजय करने लगते हैं। संसार में हमारी प्रतिष्ठा हो जाती है। विवेक और ज्ञान ही जप और विजय कहलाते हैं। उन्होंने ब्रह्मचारी कृष्णदत्त जी के साहित्य का अध्ययन करने की प्रेरणा दी। इस अवसर पर वेदपाल, रामटेक, जयपाल तथा विजयपाल नेताजी सहित समस्त ग्रामीणों का विशेष यहयोग रहा।

## आवश्यकता है कौशल्या की : वैदिक

ग्रेटर नोएडा। गत 15 मार्च को ग्रेटर नोएडा का साप्ताहिक यज्ञ प्रथम-२२१ ब्लाक में समस्त ब्लाकवासियों के सहयोग से हुआ।

इस अवसर पर सुमन कुमार वैदिक ने कहा कि राम नहीं चाहते कि उनका मन्दिर बने। वह तो चाहते हैं कि कोई कौशल्या बन उन्हें पुनः जन्म दे। कौशल्या के तप का वर्णन करते हुए उन्होंने कहा कि ब्रह्मचारी कृष्णदत्त जी के प्रवचनों से हमें ज्ञात होता है कि कौशल्या ने गर्भकाल में शुद्ध भोजन तथा विचार राम की आत्मा में दिये, जिससे राम जैसी पुनीत आत्मा का जन्म हुआ, जिसे 9 लाख वर्षों के पश्चात् भी याद किया जाता है।

## अंधेरे के पीछे दौड़ने से अंधेरा दूर नहीं होता : बालकृष्ण

सुमनकुमार वैदिक
टिटौड़ा।

आर्यसमाज टिटौड़ा का 65वां वार्षिकोत्सव साधु आश्रम में गतवर्षो की भांति होली के शुभ अवसर पर 5 मार्च को मनाया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि आचार्य बालकृष्ण जी ने कहा कि प्रतिकूलता में खड़े होने वालों का कोई बालबांका नहीं कर सकता। अंधेरा उसके पीछे डण्डा लेकर दौड़ने से नहीं, प्रकाश से दूर होता है। आचार्य कर्मवीर ने कहा कि कुछ चीजें सदैव विद्यमान रहती हैं, जिन्हें हटाया नहीं जा सकता। हम आर्य समाज को हृदय से नहीं हटा सकते। हम सभी आर्य समाज के झण्डे के नीचे चलें।

इस अवसर पर केन्द्रीय मंत्री संजीव बालियान तथा सांसद चौ० हुकम सिंह ने बेटी बचाओ के संदर्भ में प्रधानमंत्री के इस विषय में किये जाने वाले योगदान को बताया। इस अवसर पर चोटीपुरा गुरुकुल की ब्रह्मचारिणियों ने अपने विचार रखे।

ग्रामप्रधान मांगेराम के योगदान तथा उनके साथियों के आर्य समाज के प्रति प्रेम की आए हुए अतिथियों ने चर्चा की।

## सम्मानित पाठक कृपया ध्यान दें

### यदि आर्यावर्त केसरी न मिले तो...

सम्मानित सदस्यों! आर्यावर्त केसरी आपकी सेवा में प्रत्येक माह की ०१ व १६ तारीख को प्रेषित किया जाता है। दस दिन तक न मिलने पर कृपया दूरभाष पर अवगत कराएं, पुनः प्रेषित किया जायेगा। कहीं-कहीं से ऐसी शिकायतें भी मिलती हैं कि उन्हें आर्यावर्त केसरी लम्बे समय से नहीं मिला है या सदस्यता सहयोग दिये जाने के बाद भी नहीं मिल रहा है, तो इस विषय में अमरोहा- कार्यालय से दूरभाष पर पुष्टि करने के बाद कृपया सम्बन्धित डाकघर के पोस्टमास्टर, अथवा सम्भव हो तो प्रवर अधीक्षक डाकघर- संबंधित प्रखण्ड, से भी इसकी शिकायत करें। हम तो, अपने स्तर पर समुचित कार्यवाही करेंगे ही, ताकि आपको केसरी यथासमय मिलता रहे और डाक के वितरण में किसी भी प्रकार की गड़बड़ी न हो।

-डॉ. अशोक कुमार आर्य, सम्पादक- आर्यावर्त केसरी
आर्यावर्त कॉलोनी, निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा (उ.प्र.)
फोन- 05922-262033, 09758833783

## हार्दिक श्रद्धांजलि

# आर्य जगत की तीन अपूर्णनीय क्षति

### डॉ० उमाकान्त उपाध्याय की कमी महसूस होती रहेगी

आर्यसमाज के शीर्षस्थ विद्वानों में, जिनका नाम सदा अग्रणी रहता था, उनकी मृत्यु का समाचार सुनकर अत्यंत दुख हुआ। लगभग ४० वर्षो से भी अधिक श्री उपाध्याय जी के लेखों से आर्य जनता अवगाहित होती रही है। वे प्रत्येक विषय के ज्ञाता थे। चाहे इतिहास हो, अध्यात्म, संस्कृति या राजधर्म हो, आपने हर क्षेत्र में अपनी लेखनी चलाई है। वे एक अच्छे वक्ता भी थे। हैदराबाद के वैदिक संसद में मैं और पं० उपाध्याय जी वक्ता के रूप में आमंत्रित थे। पं० उमाकान्त जी ने आर्य समाज की तीसरी पीढ़ी की शोभा बढ़ाई है। आपके विचारों से हिन्दू और आर्य युवक प्रबोधित हुआ है। आपका भविष्य नवयुवकों को प्रेरणा देता रहेगा। ऐसा मुझे विश्वास है।

### पं० बेगराज आर्य के मधुर गीत व संगीत से झूम उठते थे श्रोता

आर्य जगत के सम्माननीय भजनोपदेशक एवं प्रखर वक्ता पं० बेगराज आर्य को नई और पुरानी दोनों पीढ़ियां जानती हैं। उनके ओजस्वी भजनोपदेश सुनकर श्रोता झूम उठते थे। मैं जब गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर में पढ़ता था, तब अक्सर पं० बेगराज को आमंत्रित किया जाता था। उनके भजनों एवं वक्तृत्व शैली का मेरे जीवन पर बड़ा प्रभाव पड़ा है। मैं 1981 से 1987 तक महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा में भजनोपदेशक के रूप में सेवारत था, तब मेरे संगीत और वक्तृत्व पर पं० जी की शैली का भी प्रभाव था। उनकी वीर रस से और मधुर संगीत में भीगी वाणी सुनकर श्रोतागण झूम उठते थे। वे नवयुवकों के प्रेरणास्थान थे। आगे आने वाली पीढ़ी उनके विचारों से प्रेरणा लेती रहेगी।

### सेवा कार्यों के लिए सदैव जानी जाएंगी माता प्रेमलता शास्त्री

माता प्रेमलता शास्त्री जी के देहावसान से भी आर्यजगत की बड़ी हानि हुई है। माता प्रेमलता जी ने अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के माध्यम से आदिवासी, जनजाति तथा पिछड़े विभागों में शिक्षा द्वारा हिन्दू आर्य जाति का प्रचार-प्रसार कर बड़ा महत्वपूर्ण कार्य किया है। ९२ वर्ष की आयु तक आपने दीन दुर्बल, पीड़ित लोगों की सेवा कर, नवयुवकों को एक प्रेरणा दी है। आपके सेवाकार्य से आर्यजन पिछड़े आदिवासी क्षेत्रों में हिन्दू आर्य संस्कृति का प्रसार करते रहेंगे, ऐसी आशा है। यही उनके लिए सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

प्रा0 डॉ0 चन्द्रशेखर लोखण्डे
लातूर (महाराष्ट्र)

## गो-प्रेमियों से विनम्र आग्रह

गुरुकुल आश्रम, आमसेना की गोशाला में किसी भयंकर बीमारी से कई गाय व बछड़े मर गये। पशु-डॉक्टर चिकित्सा करते रहे, परन्तु कोई लाभ नहीं हुआ। 3 घण्टे के अन्दर ही अच्छा दूध देने वाली ये १२ गायें काल के ग्रास में चली गयीं। इससे दूध की आय भी समाप्त हो गयी। लगभग ५० हजार रुपये इन गायों के चिकित्सा पर खर्च हुआ, इस प्रकार अचानक ही गुरुकुल पर यह वज्रपात हुआ। गुरुकुल की गौशाला गायों से खाली हो गयी। अतः गुरुकुल एवं गोप्रेमी सज्जनों से विनम्र आग्रह है कि इस आपत्तिकाल में गुरुकुल परिवार को सहयोग करें तथा गाय खरीदने में आर्थिक सहयोग देकर पुण्य के भागी बनें। आर्थिक सहयोग SBI खरियार रोड के गुरुकुल को दिये गये दान पर F,C,R,A,35Ac एवं 80G आयकर की छूट है।

स्वामी धर्मानन्द सरस्वती
संचालक- गुरुकुल आश्रम, आमसेना (ओड़िसा)
फोन : 09437070615, 09937690889, 09238768031

इटावा (कोटा) में आयोजित संगीतमय वेदकथा के मंच का एक दृश्य- केसरी।

# संगीतमय वेदकथा एवं राष्ट्र समृद्धि महायज्ञ सम्पन्न

अरविन्द पाण्डे
कोटा।

महर्षि दयानन्द वेदप्रचार समिति आर्य समाज, कोटा द्वारा ग्रामीण क्षेत्र में वेद प्रचार कार्यक्रम के तहत कोटा जिले के इटावा कस्बे में दो दिवसीय संगीतमय वेदकथा तथा ग्यारह कुण्डीय राष्ट्र समृद्धि महायज्ञ का आयोजन किया गया।

वेदप्रचार समिति के अध्यक्ष अरविन्द पाण्डेय ने बताया कि इटावा में कोटा शहर से ४० किलोमीटर दूर आयोजित इस दो दिवसीय संगीतमय वेदकथा में वैदिक प्रवाचक आचार्य अग्निमित्र शास्त्री ने अपने प्रवचन में वेद, ईश्वर, जीत, प्रकृति, यज्ञ, धर्म तथा अध्यात्म संबन्धी वैदिक सिद्धांतों की सरलतम रीति से जानकारी दी तथा वेदानुकूल धर्ममार्ग पर चलने का आह्वान किया।

जिला आर्य सभा कोटा के प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा ने कहा कि गांवों में वेद का प्रचार अत्यंत जरूरी है। समाज में व्याप्त अंधकार वैदिक सिद्धांतों के ज्ञान से ही दूर होगा।

इस अवसर पर जिला सभा मंत्री कैलाश बाहेती, वेद प्रचार समिति के मंत्री प्रभुसिंह, आचार्य अग्निमित्र शास्त्री, पं० क्षेत्रपाल आर्य, पं० श्योराज वशिष्ठ, पं० भूपेन्द्र सिंह आर्य एवं लेखराज शर्मा आदि ने भी विचार व्यक्त किये।

इस अवसर पर आर्य समाज द्वारा वैदिक साहित्य की स्टाल लगायी गयी, जिसमें लोगों ने बड़ी संख्या में सत्यार्थ प्रकाश एवं वैदिक साहित्य खरीदा। कथा पण्डाल में पर्यावरण संरक्षण, जल बचाओ, भूमि बचाओ, यज्ञ, खानपान तथा ऋषि के जीवन की जानकारी देने वाले चित्र, बैनर, पोस्टर तथा ओम् ध्वज लगे थे।

अर्जुन देव चड्ढा का सम्मान करते पुलिस महानिरीक्षक डॉ रवि प्रकाश मेहरड़ा- केसरी।

# उल्लेखनीय समाजसेवा के लिए अर्जुनदेव चड्ढा सम्मानित

कोटा। क्षेत्र में समर्पित भाव से व निष्ठापूर्वक किये जा रहे विभिन्न समाज सेवा कार्यो के लिए आर्य समाज के जिला प्रधान एवं पंजाबी जनसेवा समिति के अध्यक्ष अर्जुनदेव चड्ढा का एक भव्य कार्यक्रम में मुख्य अतिथि पुलिस महानिरीक्षक डॉ० रविप्रकाश मेहरड़ा द्वारा शॉल ओढ़ाकर, सम्मानपत्र व स्मृतिचिह्न प्रदान कर सम्मानित किया गया।

संस्थान के अध्यक्ष डॉ० टीसी मेहता ने कहा कि इस संसार में सेवा से बड़ा कोई पुण्य नहीं है। सभी धर्मो व समाजों में इसे सर्वश्रेष्ठ माना गया है। इस सर्वश्रेष्ठ कार्य को करने में अर्जुनदेव चड्ढा कोटा शहर में अग्रणी रहते हुए समाजसेवा के कार्य करते आ रहे हैं। इसके लिए संस्थान आपकी इस निष्ठा के आगे नतमस्तक होकर सम्मान एवं अभिनन्दन करता है। इस अवसर पर अनेक गणमान्य नागरिक उपस्थित थे। संस्थान के सचिव किशोर मदनानी ने सभी का आभार व्यक्त किया।

जेल अधीक्षक शंकर सिंह को वेदों के सैट देते आर्यगण- केसरी।

# केन्द्रीय कारागृह में भेंट किया वेदों का सैट

कैलाश बाहेती
कोटा।

ईश्वरीय वाणी वेद हमें सकारात्मक सोच देती है। वेद हमें अच्छे विचार देता है, मानवीय गुणों का विकास वेद से होता है। वेद का स्वाध्याय करें। यहां रहकर जीवन में सुधार करें, एवं यहां से जाने के बाद समाज की मुख्य धारा से जुड़ें। उक्त विचार मुख्य अतिथि के०के० कौल (पूर्णकालिक निदेशक डी०सी०एम० श्रीराम) ने केन्द्रीय कारागृह में आर्य समाज जिला सभा कोटा द्वारा आयोजित कार्यक्रम में व्यक्त किये।

आर्यसमाज जिला सभा के प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा ने कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आर्यसमाज की स्थापना कर समाजसेवा का मूलमंत्र दिया। आर्य समाज के सुधार कार्यक्रमों से हम सभी क्षेत्रों में अग्रणी हैं। हम सकारात्मक सोच रखें, जिससे आपके बुरे विचार स्वत: समाप्त हो जायेंगे एवं आप अच्छा सोचेंगे।

महर्षि दयानन्द वेद प्रचार समिति कोटा के अध्यक्ष अरविन्द पाण्डेय ने कहा कि सभी समस्याओं का समाधान वेद में है। वेद हमें अच्छे कार्य करने की प्रेरणा देता है।

डीएवी के धर्म शिक्षक शोभाराम आर्य ने गायत्री मंत्र से कार्यक्रम शुभारंभ करते हुए कहा कि हम कार्य करने से पहले विचार कर लें, तो गलती नहीं होती। डीएवी के संगीतज्ञ तुलसीदान सिंह ने प्रभुभक्ति का भजन गया, जिसे सभी कैदियों ने तालियां बजाकर साथ दिया।

इस अवसर पर जेल के पुस्तकालय को वेद की 14 पुस्तकों का सैट जेल अधीक्षक शंकरसिंह व जेलर नरेन्द्र स्वामी को भेंट किया गया, जिससे यहां शिक्षित कैदी इसका स्वाध्याय करके अपने जीवन को सुधारें व दूसरों के जीवन को भी लाभान्वित करें।

जेल में बंदी महिलाओं को भी के०के० कौल द्वारा आर्य समाज की ओर से गर्म कार्डिगन व उनके बच्चों के लिए भी गर्म कपड़े दिये गये। इस अवसर पर जिलामंत्री कैलास बाहेती, आर्य समाज रेलवे कालोनी के प्रधान हरिदत्त शर्मा, आर्य समाज विज्ञाननगर के प्रधान जेएस दुबे, आर्य समाज तलवन्डी के उपप्रधान श्रीचंद गुप्ता व राजीव आर्य उपस्थित थे। आभार जिलामंत्री कैलाश बाहेती ने किया।

नवदम्पत्तियों को आशीर्वाद देते आर्यसमाज के पदाधिकारी- केसरी।

# अनाथ बच्चों के विवाह में आर्य समाज ने दिया आशीर्वाद

अरविन्द पाण्डेय
कोटा।

करणीनगर विकास समिति में पल-बढ़कर बड़ी हुई दो लड़कियों के विवाह समारोह में आर्य समाज के जिला प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा, आर्य विद्वान, डॉ० के०एल० दिवाकर, आर्य समाज विज्ञान नगर के प्रधान जेएस दुबे, गायत्री विहार के प्रधान अरविन्द पाण्डेय व राजीव आर्य ने मंच पर वेदमंत्रों के उच्चारण के साथ दूल्हा-दुल्हन को आशीर्वाद दिया।

आर्य समाज जिला सभा द्वारा नवदम्पत्तियों को कम्बल, शॉल, स्वेटर, कार्डीगन, साड़ी आदि उपहार स्वरूप भेंट किये गये। दोनों लड़कियां लक्ष्मी व रानी तीन वर्ष की उम्र से ही इस संस्थान में रह रही थीं, जिनकी आयु 18 वर्ष से ऊपर होने के पश्चात् लक्ष्मी का विवाह जयपुर निवासी जितेन्द्र जैन एवं रानी का विवाह कोटा निवासी विनोद पोरवास के साथ सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर कोटा की विभिन्न समाजसेवी संस्थाओं के प्रतिनिधि, प्रतिष्ठित गणमान्य नागरिक उपस्थित थे। संस्थान की संचालिका राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त प्रसन्ना भण्डारी ने सभी आगंतुकों का स्वागत किया तथा संस्थान के अध्यक्ष सीएम सक्सेना ने सभी का आभार व्यक्त किया।

कैमरे की नजर में आंचलिक गतिविधियां- केसरी।

# आर्यसमाज ने बांटे स्कूल में स्वेटर

अरविन्द पाण्डेय
कोटा।

आर्य समाज जिला सभा कोटा की ओर से राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय, बोरखेड़ा में छात्राओं को गर्म कपड़े और कॉर्डिगन बांटे गये। स्वेटर और मौजे पाकर छात्राओं के चेहरे खिल उठे।

आर्य समाज जिला सभा के प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा ने कहा कि आर्य समाज हर वंचित व्यक्ति की सुरक्षा करने में विश्वास करता है। जरूरतमंद की सेवा करने से बड़ा कोई धर्म नहीं है। भीषण सर्दी से बचाव के लिए बालिकाओं के लिए गर्म कपड़ आवश्यक थे।

उन्होंने कहा कि आर्य समाज अपने स्थापना काल से ही नारी शिक्षा पर बल देता रहा है। उन्होंने कहा कि एक नारी पढ़ेगी सारी पीढ़ी पढ़ेगी। उन्होंने कहा कि कड़ी कक्षाओं में अध्ययनरत बालिकाएं छोटी कक्षाओं के छात्र-छात्राओं को पढ़ाकर घर में आर्थिक सहयोग करें।

इस अवसर पर हरिदत्त शर्मा, प्रधान आर्य समाज, रेलवे कालोनी, प्रभुसिंह कुशवाहा मंत्री महर्षि दयानन्द वेद प्रचार समिति, कृपाल सिंह चौधरी, आर्य समाज रेलवे कालोनी, राजीव आर्य आदि उपस्थित थे।

# आणंद में हुआ वैवाहिक परिचय सम्मेलन

आणंद (गुजरात)। गुजरात के आणंद में पहली बार आर्य युवक व युवती परिचय सम्मेलन समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ, जिसमें युवक व युवतियों ने मंच पर अपना परिचय दिया।आर्य समाज द्वारा आयोजित इस परिचय सम्मेलन में मुख्य अतिथि व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उपप्रधान तथा गुजरात प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान सुभाष चन्द्र अग्रवाल ने कहा कि यह हमारा सौभाग्य है कि यह कार्यक्रम गुजरात में हो रहा है, तथा निकट भविष्य में भी ऐसे कार्यक्रम गुजरात में हों, ऐसी मेरी कामना है।

राष्ट्रीय संयोजक अर्जुनदेव चड्ढा ने बताया कि अब तक हुए नौ सम्मेलनों के माध्यम से 385 परिवार आपस में जुड़े हैं, जिनके रिश्ते संपन्न हुए हैं। समान गुण, कर्म, स्वभाव, के आधार पर रिश्ते, जिससे परिवारों की आपसी मधुरता बढ़ेगी तथा परिवार में शांति व आपसी विश्वास का वातावरण बनेगा।

# पीपल्दा में हुई वेद प्रचार संगोष्ठी

## युवा वर्ग वेदों से जुड़े : अग्निमित्र

अरविन्द पाण्डेय
कोटा।

आज युवा वेदों से जुड़ें और संस्कृति संरक्षण का कार्य करें। यह विचार आचार्य अग्निमित्र शास्त्री ने कोटा (राज०) के ग्राम पीपल्दा में आयोजित युवा संगोष्ठी में व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि वेद भारतीय धर्म, अध्यात्म तथा संस्कृति के मूल हैं, इसलिए शिक्षित युवाओं को वेदों से जुड़कर मूल की रक्षा करनी चाहिए।

इस अवसर पर अलीगढ़ से पधारे भजनोपदेशक पं० भूपेन्द्र सिंह आर्य और पं० लेखराज शर्मा ने राष्ट्रभक्ति से प्रेरित गीतों की प्रस्तुति देते हुए युवा वर्ग को बीड़ी, तम्बाकू, गुटखा, शराब तथा अण्डे, मांस आदि से दूर रहने का आह्वान किया।

महर्षि दयानन्द वेद प्रचार समिति के अध्यक्ष अरविन्द पाण्डेय ने जानकारी देते हुए बताया कि ग्रामीण रेंज में तो प्रचार कार्यक्रम योजना के तहत समिति द्वारा २७ दिसम्बर को कोटा जिले के पीपल्दा गांव में युवा संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर बड़ी संख्या में नवयुवक उपस्थित थे। संचालन संयोजक मधुसूदन ने किया। इस अवसर पर इटावा रेंज के तहसील प्रभारी नरेन्द्र नागर भी उपस्थित थे। अन्त में वेद प्रचार समिति के मंत्री प्रभूसिंह कुशवाहा ने उपस्थित सभी युवाओं का आभार व्यक्त किया।

# एड्स रोकथाम को लगाई चित्र प्रदर्शनी

कोटा। पिपुल्स हैल्थ आर्गेनाइजेशन की ओर से विश्व एड्स रोकथाम दिवस पर सोमवार को चौपाटी बाजार में चित्र प्रदर्शनी आयोजित की गयी।

इस अवसर पर आर्गेनाइजेशन की कोटा ब्रांच के अध्यक्ष अर्जुनदेव चड्ढा ने कहा कि व्यक्ति का आत्मसंयम ही एड्स रोकथाम के लिए सर्वथा कारगर है। उन्होंने कहा कि इस विश्वव्यापी बीमारी को रोकने में महिलाओं की भूमिका अहम साबित हो सकती है।

# आर्य समाज ने आदिवासी मजदूरों को बांटे कम्बल

कैलाश बाहेती
कोटा।

विज्ञाननगर कोटा के फ्लाईओवर के नीचे सर्द हवाओं में ठिठुरते मजदूर आदिवासी परिवारों को आर्यसमाज जिला सभा कोटा के प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा ने गर्म कम्बल व बच्चों को वस्त्र प्रदान किये।

इस अवसर पर जिला सभा के मंत्री कैलास बाहेती, कार्यालय मंत्री अरविन्द पाण्डेय, महर्षि दयानन्द वेद प्रचार समिति के मंत्री प्रभुसिंह

कुशवाहा व आर्यसमाज तलवंडी के उपप्रधान श्रीचन्द गुप्ता आदि सहित अनेक गणमान्य जन भी उपस्थित थे।


# युग-जागृति वैदिक गुरुकुल

## गुरुग्राम (गुड़गांव) हरियाणा

## : प्रवेश प्रारम्भ :

धनुर्वेद के महान आचार्य द्रोण की कर्मस्थली एवं अरावली की सुरम्य पर्वत श्रृंखलाओं के मध्य सुविस्तृत भूखण्ड में स्थित श्रद्धेय आचार्य राम किशोर 'मेधार्थी' के कुशल निर्देशन में आधुनिक एवं प्राचीन शिक्षा प्रणाली के अन्तर्गत अत्याधुनिक सुविधाओं से युक्त गुरुकुल संचालित है। प्रवेश परीक्षा उत्तीर्ण होने के पश्चात् ही विद्यार्थी को कक्षा 3,4 व 5 में योग्यतानुसार प्रवेश दिया जा सकता है। यह संस्थान पूर्णत: आवासीय है। संस्थान में प्राच्य व्याकरण के साथ-साथ अन्य सभी आधुनिक विषयों का नवीन शैक्षिक तकनीकी के द्वारा गहनता से अध्ययन कराया जाता है। शिक्षण संस्थान परिवेश पूर्णत: वैदिक संस्कारों से परिपूर्ण है। इसके साथ ही भोजन, आवास एवं अध्ययनादि की व्यवस्था भी अति उत्तम कोटि की है। समस्त अभिभावक बन्धु इसका लाभ उठाकर अपनी सन्तानों को सुशिक्षित, संस्कारवान, चरित्रवान एवं राष्ट्रभक्त बनाकर परिवार, समाज एवं राष्ट्र के कल्याण का मार्ग प्रशस्त करें।

विशेष : प्रवेश हेतु आवेदन एवं विवरण पुस्तिका संस्थान कार्यालय से किसी भी कार्यदिवस में १००/- भुगतान कर प्राप्त की जा सकती है। स्थान रिक्त रहने तक ही विद्यार्थी प्रवेश पा सकता है।

सज्जन सिंह
संस्थापक
चलभाष : ०9810545951

आचार्य रामकिशोर मेधार्थी
कुलाधिपति/ प्राचार्य
चलभाष : ०8750614501, ०812650067२

ई-मेल: yugjagrti.sajjansingh@gmail.com

# आओ मंथन करें

नव संवत्सर चैत्र शुक्ल प्रतिपदा संवत् 193२ वि० को महर्षि दयानन्द सरस्वती ने मुम्बई में सर्वप्रथम आर्यसमाज की स्थापना की थी। निश्चय ही यह महर्षि का एक अभूतपूर्व कदम था, जिससे सम्पूर्ण विश्व में एक महान क्रान्ति का उदय हुआ। वस्तुत: यदि ऋषिवर दयानन्द न आते, तो न देश व विश्व का परिदृश्य कुछ और ही होता।

विश्व भर में नव संवत्सर २०७२, मानव सृष्टि संवत् 1960853116 के साथ ही आर्य समाज स्थापना दिवस का पावन पर्व बड़ी श्रद्धा के साथ समायोजित किया जाता है। इसी दिन मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम का राज्याभिषेक हुआ तथा इसी दिन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संस्थापक डॉ० केशवराव बलिराम हेडगेवार का जन्मदिवस भी हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है। आर्य समाज का स्थापना दिवस हमें हमारे गौरवपूर्ण इतिहास से जोड़ता है, तथा वर्तमान के आत्मचिन्तन और भविष्य के पथ की दिशा देता है। यह स्मरणीय है कि जब महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने पूज्य गुरुदेव स्वामी विरजानन्द से दीक्षा प्राप्त करने के बाद मथुरा की कुटी से विदा ली और जब वे अपने गुरु को दक्षिणा देने के लिए लौंग सहित उपस्थित हुए, तब गुरु विरजानन्द ने अपने प्रिय शिष्य स्वामी दयानन्द से कहा था कि यदि तुम वास्तव में मुझे गुरु दक्षिणा देना चाहते हो, तो आज से संकल्प करो कि मैं वेदों का प्रचार-प्रसार करूंगा। संसार से अज्ञान रूपी अंधकार को दूर करूंगा, तथा गुलामी के बन्धनों में जकड़ी मातृभूमि को अंग्रेजी दासता से मुक्त कराने में कोई कसर नहीं छोड़ूंगा। मत-मतान्तर तथा मजहब के मकड़जाल में फंसी मानव जाति को वैदिक धर्म का संदेश सुनाऊंगा तथा अविद्या, अज्ञान, रूढ़िवाद, पोंगापंथ तथा आडम्बरो का समूल नाश करूंगा। उन्होंने ऋषिवर दयानन्द को यह भी संकल्प दिलाया कि वैदिक संस्कृति के उन्नयन व प्रचार-प्रसार में अपना सम्पूर्ण जीवन लगा दोगे। गुरुवर विरजानन्द ने भावुक होकर यह भी कहा कि यदि तुम ऐसा कर सकें, तो मैं समझूंगा कि मेरे द्वारा दी गयी शिक्षा आज सार्थक हो गयी है। देव दयानन्द ने भी बिना एक भी क्षण नष्ट किये गुरुदेव की कुटिया में यह दृढ़ संकल्प लिया कि वह वेदों के सच्चे स्वरूप को समाज के सम्मुख रखेंगे, तथा गुरुदेव की भावना के अनुरूप विश्व भर में समग्र क्रान्ति का उद्घोष करेंगे। नि:संदेह महर्षि का उक्त संकल्प ही आज तक भारत के अस्तित्व को बचाए हुए है, अन्यथा भारत की आज क्या दशा होती, इसकी कल्पना करके ही हृदय कांप उठता है। धन्य हैं महर्षि दयानन्द!

निश्चय ही, ऋषिवर दयानन्द ने उक्त दिशा में अभूतपूर्व कार्य कर, सारे संसार को झकझोर दिया। उन्होंने विश्व भर में वेदों का शंखनाद करते हुए वैदिक संस्कृति की उत्कृष्टता का उद्घोष किया। वास्तव में जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में जो कार्य ऋषिवर ने कर दिखाया, वह विस्मित कर देता है। उन्होंने जहां सन् 1875 में आर्य समाज की स्थापना की, वहीं अभूतपूर्व क्रांति का महान ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश की रचना कर, तर्क और विज्ञानवाद की एक विलक्षण कसौटी प्रदान की।

उपर्युक्त परिप्रेक्ष्य में क्या यह विचारणीय नहीं है कि आज ऋषिवर दयानन्द के अनुयायी अर्थात् अपने आप को आर्य कहने वाले हम लोग उस संकल्प की दिशा में कितने प्रयत्नशील हैं? हम ऋषिवर दयानन्द के उस संकल्प की साकार परिणति के लिए कितना पुरुषार्थ कर रहे हैं? क्या हम सिद्धांत के स्थान पर सत्ता, पद, और निहित स्वार्थों की पूर्ति के लिए नहीं लड़ रहे हैं? अत: अनिवार्य है कि हम सच्चे आर्य कहलाने के पात्र बनें, तभी उक्त संकल्प भी साकार होगा।

# महर्षि दयानन्द सरस्वती की शिक्षाएं

हरिश्चन्द्र आर्य

महर्षि दयानन्द जयन्ती फाल्गुन कृ० १०, सं० २०71 वि० सार्वभौमिक सार्वकालिक सार्वदेशिक है। ईश्वर एक है जो इस सृष्टि का रचयिता पिता और मानव का गुरु है। सभी मनुष्य, चाहे वे पूर्व में या पश्चिम में एशिया या यूरोप में, अफ्रीका या अमरीका में रहते हों, ईश्वर की संतान हैं और आपस में भाई-भाई हैं। ईश्वर सबका पिता है। वे सभी एक ही परिवार के सदस्य हैं। सबको एक-दूसरे को प्रेम एवं एक-दूसरे की सहायता करनी चाहिए। ईश्वर सबको समान रूप से प्रेम करता है, और न्यायकारी है। वह निराकार है और अमर है। वही एक उपास्य है।

स्वामी दयानन्द जगत गुरु थे। उनकी शिक्षाएं किसी विशेष जाति या देश के लिए नहीं थीं। उन्होंने सारे संसार को एक समझा और संसार के सभी मानवों को अपने देशवासियों के समान समझा तथा उनका सत्य शिक्षाओं को सिखाने का प्रश्न है उन्होंने भारतीय यूरोपीय या अमरीका निवासियों में कोई भी अन्तर नहीं समझा। उन्होंने संसार के मानव मात्र के उत्थान उन्नयन उत्कर्ष के लिए कार्य किया।

परमात्मा ने मानव मात्र के कल्याण के लिए सृष्टि के आदि में वेद का दिव्य ज्ञान दिया। वेद का ज्ञान मानव मात्र के कल्याण के लिए परमात्मा का आदेश एवं उपदेश है। जो बिना रंगभेद व देशकाल का ध्यान किये बिना सभी मानवों के लिए है। सबको इस दिव्य ज्ञान को याद करना चाहिए और इसके अनुसार आचरण करना चाहिए। वेदों पर आर्यावर्त निवासियों का ही एकाधिकार नहीं है। प्रत्येक पुरुष, स्त्री, छोटा, बड़ा, धनी, निर्धन, विद्वान और अशिक्षित सबको वेद पढ़ने सुनने और उसके सत्य को हृदयांगम करने का अधिकार है। ब्राह्मण, शूद्र सबको वेदों पर समान अधिकार है।

महर्षि ने यह सिखाया कि प्रत्येक मानव एवं प्रत्येक पशु, चाहे वह थलचर है या नभचर, या जलचर, सबके अन्दर आत्मा है और किसी को भी अपने स्वार्थ के लिए किसी जीव की हत्या का अधिकार नहीं है। इसके विपरीत जहां तक हो सके, एक-दूसरे की सहायता करनी चाहिए। स्वामी दयानन्द ने कहा कि प्रत्येक मनुष्य कार्य करने में स्वतंत्र है और वह जैसा करेगा, वैसा ही फल पाएगा। अच्छा करे या बुरा करे, कोई भी उन्हें उनके कर्मफल से नहीं बचा सकता। ईश्वर न्यायकारी है और न्याय करता है।

ईश्वर को मनुष्य के साथ व्यवहार में कोई बिचौलिया नहीं चाहिए। सृष्टि के आरम्भ में जीवन को सुचारू रूप से चलाने के लिए वेदज्ञान दे दिया। उसे किसी दूत के भेजने की आवश्यकता नहीं है। सभी मनुष्य उसके पुत्र हैं। उनमें से कोई भी न तो उसके अधिक निकट, न अधिक प्रिय है। उसकी सृष्टि में सब बराबर हैं। वहां किसी की भी कोई सिफारिश नहीं चलती और प्रार्थना करने से क्षमा नहीं मिलती। प्रत्येक मनुष्य को अपने किए का फल अवश्य ही भोगना होगा।

# मानव जाति पर कलंक है पशु बलि

## देवी-देवताओं की पूजा के नाम पर महापाप है निरपराध पशुओं की हत्या

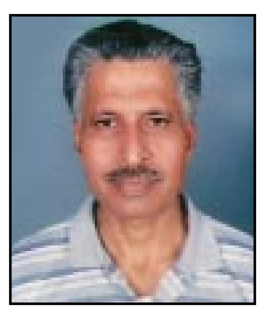

अरविन्द कुमार मेहता

देवियों तथा सज्जनों! परम पिता परमात्मा ने इस संसार में सभी प्राणियों में मानव को श्रेष्ठ तथा बुद्धिजीवी बनाया है। पशु-पक्षियों, कीट-पतिंगों को मानव व प्रकृति का सहायक बनाया गया है। किंतु कुछ स्वार्थी मनुष्य अपनी अज्ञानता व अन्धविश्वास के कारण पशुबलि प्रथा चला रहे हैं व मानव समाज को पाप का भागीदार बना रहे हैं और ईश्वरीय गुण-कर्म-स्वभाव से दूर कर रहे हैं वेद-शास्त्रों व अन्य आर्ष ग्रन्थों ने तथा भगवान राम, कृष्ण व ऋषियों ने तथा आदिशंकराचार्य व महात्मा बुद्ध, महर्षि दयानन्द सरस्वती, विवेकानन्द व अनेक समाज सुधारकों ने पशुबलि को महापाप बताया है।

- पशुबलि से देवी-देवता बदनाम होते हैं।
- पशुबलि से नरक मिलता है। पशुबलि से पूजा अपवित्र होती है।
- जीव हिंसा से हमारे परिवारों के संस्कार व वातावरण दूषित होते हैं।
- पशुहत्या से आठ लोग पापी होते हैं- (1) सम्मति देने वाला, (२) पूजा के नाम पर बहकाने वाला, (3) खरीदने वाला, (4) बेचने वाला, (5) समर्थन करने वाला, (6) पकाने वाला, (7) परोसने वाला, (8) खाने वाला।

भारत को देवभूमि रहने दो, राक्षस भूमि न बनाओ। आर्य समाज, धार्मिक, सामाजिक सुधार का क्रान्तिकारी विशाल संगठन है और प्रत्येक धार्मिक व सामाजिक अन्धविश्वास एवं पशुबलि का विरोध करता है। संसार को सत्य ईश्वरीय धर्म वैदिक धर्म पर चलने की शिक्षा देता है।

आर्य भवन ट्रस्ट
6०, सैक्टर-4, विभवनगर,
आगरा- २८२००१,
फोन : ०56२-4०००793

# आर्यजगत (साप्ताहिक) नई दिल्ली का हंसराज विशेषांक : एक प्रतिक्रिया

आई०डी० गुलाटी

(1) यह विशेषांक 68 पृष्ठों का है। पहले अप्रैल में विशेषांक प्रकाशित होता था, लेकिन इस वर्ष नवम्बर में प्रकाशित हुआ है।
(२) प्रथम कवर पृष्ठ पर हंसराज विशेषांक नहीं लिखा है।
(3) विक्रमी संवत् २०7० लिखा है, जबकि २071 लिखना चाहिए था।
(4) कागज, छपाई, फोटो, आकार उत्तम है।
(5) कई युवकों-पुरुषों ने टाई बांधी हुई है, जबकि टाई बांधना आर्य संस्कृति नहीं, बल्कि ईसाई संस्कृति का प्रतीक है।
(6) 816 विद्यालय डीएवी प्रबन्धक कमेटी देश में चला रही है।
(7) हायर सैकेन्ड्री, इंटर, डिग्री कालेजों की अलग-अलग संख्या नहीं दर्शायी गयी है।
(8) अधिकांश डिग्री कालजों में सम्भवत: सहशिक्षा है, जो कि नहीं होनी चाहिए।
(9) धर्म शिक्षा की परीक्षाएं डीएवी एजुकेशन बोर्ड द्वारा ली जाती है। धर्म शिक्षा व यज्ञ की कक्षाएं चलती हैं, किंतु इसके बारे में कभी कुछ क्यों नहीं लिखा जाता है।?
(1०) जालन्धर में डीएवी विश्वविद्यालय चालू हो गया है। इसमें सामान्य विषय ही पढ़ाए जाते हैं। बीए तथा एमए में वैदिक साहित्य अथवा चारों वेद की कक्षा की व्यवस्था नहीं है।
(11) यह भी पता नहीं है कि पंजाब के डीएवी कालेज डीएवी विश्वविद्यालय से संबन्धित होंगे या नहीं?
(1२) महात्मा हंसराज का उद्देश्य था कि छात्र आर्य बनें और वैदिकधर्मी जीवन पर्यन्त रहें। हमें इस लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए कार्य करने चाहिए।
(13) डीएवी विश्वविद्यालय खुलवाने वाले सज्जन बधाई के पात्र हैं। अब संचालकों का कर्तव्य है कि वे इसकी पहचान बनावें और डीएवी डिग्री कालेजों को इससे संबन्धित करें और सहशिक्षा को कम या समाप्त करने की पूरी कोशिश करें।

-चौक बाजार, बुलन्दशहर (उ०प्र०)
मोबा. : 08958778443

# यज्ञोपवीत के तीन धागों का महत्व

खुशहाल चन्द्र आर्य

यज्ञोपवीत के तीन धागे, मनुष्य के ऊपर जो तीन ऋण हैं, उनसे उत्कर्षण होने का संकेत करते हैं। यह धागे मनुष्य को याद दिलाते हैं कि तुम्हारे ऊपर जो तीन ऋण हैं उनसे उऋण होना तुम्हारा पावन कर्तव्य है, जिसका मनुष्य को पालन करना चाहिए। वे तीन ऋण इस भांति हैं –

**1. ऋषि ऋण–** ऋषि ऋण का तात्पर्य यह है कि हमारे ऋषि–मुनियों ने बड़े परिश्रम और अपना पूरा जीवन स्वाध्याय में लगाकर ईश्वर प्रदत्त वेद ज्ञान का गहन अध्ययन करके उनके सही अर्थों के आधार पर उपवेद, उपनिषद, दर्शन, ब्राह्मण, ग्रन्थ व स्मृतियां आदि लिखकर हमको पढ़ने के लिए जो सामग्री दे दी है। उसको पढ़कर हम अपने जीवन को उन्नत व पवित्र बनाकर मोक्ष–मार्ग पर अग्रसर हो सकते हैं। इस लाभ के लिए जो हमारे ऊपर ऋषि मुनियों ने उपकार किये हैं उस ऋण से उऋण होने के लिए या उनके परिश्रम व स्वाध्याय को सफल बनाने के लिए एक ही मार्ग है कि हम उनके लिखे ग्रन्थों का स्वाध्याय नित्य करें और अपने जीवन को उन्नत बनाएं तभी हम उनके ऋण से उऋण हो सकेंगे। जैसे एक पिता अपना पूरा जीवन लगाकर जो धन संग्रह करता है, वह अपने पुत्रों को दे देता है, उन पुत्रों का यह कर्तव्य है कि इस धन की वृद्धि करें और परोपकार के कार्यों में लगावें। इसी प्रकार भी ऋषि ऋण से तभी मुक्त होगें जब हम उनके ग्रन्थों का स्वाध्याय करके अपने जीवन को तथा दूसरों के जीवन को सफल व सुखी बनाने और उन्हीं ग्रन्थों के अनुसार और ग्रन्थ लिखकर आने वाली सन्तानों को और अधिक सामग्री देवें। यज्ञोपवीत का एक धागा इसी ऋण से मुक्त होने का सन्देश देता है।

**2. देव ऋण–** यह ऋण दो किस्म का होता है। 1. पांच जड़ देवता जिनमें पृथ्वी, जल, हवा, अग्नि व आकाश हैं। यह पांचों देवता हमारी पाँचों ज्ञानेन्द्रियों, आंख, नाक, कान, जिह्वा व त्वचा, इनको अपने प्रभाव से प्रभावित करके इनको ज्ञान यानि चेतना देकर कार्यों में प्रवृत्त करते हैं। अग्नि हमारी आंखों को रूप देखने की शक्ति देती है आकाश शब्द के रूप में कानों को सुनने की शक्ति देता है। पृथ्वी गन्ध के रूप में नाक को सूंघने की शक्ति देती है। हवा स्पर्श के रूप में अनुभव करने की शक्ति देती है। इसी प्रकार जिह्वा को रस के रूप में पानी स्वाद लेने का अनुभव करवाता है। इन उपकारों के लिए हम इन जड़ देवताओं को यज्ञ द्वारा सन्तुष्ट व प्रसन्न करते हैं। यहां यह लिखना बहुत आवश्यक है कि जिस प्रकार शरीर के सब अंगों को खुराक व शक्ति पहुंचाने के लिए हम मुख से भोजन करते हैं। मुख से किया हुआ भोजन पेट में जाकर उसका खून व रस बनता है। उस खून व रस को हमारी शरीर की नसें (धमनियां) पूरे शरीर में जाकर प्रत्येक अंग को शक्ति देती हैं। इसी से उनमें कार्य करने की क्षमता आती है। इसी प्रकार अग्नि सब जड़ देवताओं का मुख है। यज्ञ द्वारा दिया हुआ घी तथा सामग्री अग्नि में जलकर उसकी सुगन्ध हजार गुना तेज होकर प्रकृति के बाकी चारों देवताओं के पास पहुंचा देती है यानि पूरी प्रकृति में जो प्राणियों द्वारा दिये गये श्वांस, टट्टी, पेशाब व पसीना आदि से जो दुर्गन्ध होती है, वह यज्ञ द्वारा सुगन्धित हो जाती है और पूरा वातावरण सुगन्धित व पवित्र हो जाता है। इसीलिए प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य है कि वह जितना वातावरण अपने शरीर से बाहर आने वाली वस्तुओं से गन्दा करते हैं उतना ही वातावरण को यज्ञ द्वारा सुगन्धित करे जिससे पूरा वातावरण सदैव ही पवित्र बना रहे। इसीलिए वेद भी ''यज्ञो वै श्रेष्ठतम् कर्म'' कह कर यज्ञ को सर्वश्रेष्ठ कर्म बताया है। साथ ही ''स्वर्गकामो जयते'' स्वर्ग की कामना करने वालों को यज्ञ करना चाहिए। दूसरा देव है देवों का देव ''महादेव'' यानि ईश्वर है। ईश्वर ने प्राणी मात्र पर विशेषकर मनुष्य के ऊपर बड़े उपकार किये हैं। ईश्वर ने मनुष्य के लिए सुन्दर सृष्टि की रचना करके मनुष्य के उपयोग, सहयोग व उपयोग के लिए जल, वायु अग्नि, फल–फूल पशु–पक्षी आदि निःशुल्क देकर बड़ा उपकार किया है। इन्ही के सहयोग से मनुष्य अपने जीवन को सुन्दर ढंग से चलाते हुए अपना तथा दूसरों का जीवन सुखी बनाते हुए मोक्ष की ओर अग्रसर होता है जो जीवन का अन्तिम लक्ष्य है। ईश्वर के इस निःस्वार्थ उपकार के लिए हम सन्ध्या करते हैं। सन्ध्या में हम ईश्वर के गुणों का गुण–गान करते हैं और उसके गुण, दया, करूणा, परोपकार, सहृदयता, सहयोग आदि गुणों को अपने जीवन में धारण रकते हैं। जिससे हमारा जीवन उत्तम और श्रेष्ठ बनता है और हम मोक्ष प्राप्ति के अधिकारी बनते हैं। इन उपकारों के ऋण से हम सन्ध्या द्वारा उऋण होते हैं। इसीलिए दिन में दो बार प्रातः व सायं सन्ध्या करना हमारे ऋषि–मुनियों ने बताया है जिसे सब मनुष्यों को करना चाहिए।

**3. पितृ ऋण–**माता–पिता तथा बृद्ध जनों के हमारे ऊपर बहुत उपकार होते हैं। माता हमको नौ महीने पेट में रखती है फिर बालक पन में हमारा पालन करती है। हमें चलना–बोलना सीखाती हैं पिता अपने बच्चे को अच्छी शिक्षा दिलाता है फिर उसका विवाह करके कमाने के योग्य बनाता है और अपना कमाया हुआ धन बच्चों को दे देता है। वृद्ध जनों का अनुभव और उनका आशीर्वाद हमारा बहुत सहयोगी बनता है। इस प्रकार माता–पिता व वृद्धजनों का उपकार हमारे पूरे जीवन को सुखी व समृद्धशाली बनाने में अति सहयोगी रहता है। इसलिए हमें उनकी सेवा व सुश्रूषा पूरी श्रद्धा के साथ करनी चाहिए जिससे हम उनके ऋण से कुछ अंशों में उऋण हो सकें। इस प्रकार यज्ञोपवीत का तीसरा धागा हमें माता–पिता एवं वृद्धजनों की सेवा व सुश्रूषा करने का आदेश देता है। हमें यहां यह भी स्पष्ट करना चाहिए कि सेवा और सुश्रूषा क्या होती है? सेवा को हम सभी जानते हैं। माता–पिता की खाने–पीने, रहने–सहने आदि की सुन्दर व्यवस्था करना उनको हर किस्म से प्रसन्न रखते हुए उनकी आज्ञा का पालन सेवा कहलाती है। सुश्रुषा का तात्पर्य है उनकी बात को आदरपूर्वक सुनना यानि उनकी बातों या उनकी इच्छाओं की अवहेलना न करना। उनसे हर काम पूछ कर करना और उनके महत्व को बनाए रखना उनकी सुश्रूषा करना है। आज कल माता–पिता व वृद्धजनों की सेवा तो कुछ अंश में हो जाती है परन्तु सुश्रूषा का अभाव बना रहता है इसलिए सुश्रूषा का भी बच्चों को पूरा ध्यान रखना चाहिए।

एक बात यह भी जानने योग्य है कि हमारे पौराणिक भाई छः भागों की यज्ञोपवीत (जनेऊ) पहनाते हैं। उनका मानना है कि स्त्रियों को यज्ञोपवीत नहीं पहनना चाहिए, कारण ये चार दिन अपवित्र रहती हैं। परन्तु यह स्वार्थी पंडितों का डाला हुआ अन्धविश्वास है कारण अपवित्र तो मनुष्य भी टट्टी जाते वक्त तथा पेशाब करते वक्त रहता है। इसलिए जब पुरूष जनेऊ पहनता है तो स्त्रियां भी जनेऊ पहने तो आपत्ति नहीं। स्त्रियों को यज्ञोपवीत न पहनने देना यानि उनको तीनों ऋणों से वंचित रखना, यह नारी जाति के ऊपर अन्याय करना है। क्या स्त्रियां अपने माता–पिता, सास–ससुर की सेवा व सुश्रूषा नहीं कर सकतीं? यह तो देव दयानन्द का बहुत बड़ा उपकार है कि जिन्होंने स्त्रियों व शूद्रों को वेद पढ़ने व सुनने का अधिकार दिलाया। इसीलिए ऋषि ने आर्य समाज के दस नियमों में तीसरा नियम यह भी बताया कि वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है, वेद का पढ़ना–पढ़ाना और सुनना–सुनाना सब आर्यों (सज्जन व श्रेष्ठ पुरूषों व स्त्रियों) का परम धर्म है। अब हमें यह अन्धश्विास कि स्त्रियों को यज्ञोपवीत धारण नहीं करना चाहिए, इसे हटा देना चाहिए ताकि स्त्रियां भी यज्ञोपवीत धारण करके तीनों ऋणों का पालन कर सकें जो ऋषि के बताने से वेदानुकूल है।

**द्वारा–गोबिन्द राम आर्य**
**एण्ड सन्स, 180, महात्मा**
**गांधी रोड (दो तल्ला)**
**कोलकत्ता–700007**
**मो0नं0–9830135794**

**प्रवेश सूचना**

**सत्र- २०15-16 में छठी कक्षा (आयु +9 से -11) वर्ष कन्याओं के प्रवेश हेतु नियमावली एवं पंजीकरण पत्र (मूल्य केवल १००/-) भरकर 31.०३.२०15 तक गुरुकुल में जमा करवाएं। लिखित प्रवेश-परीक्षा ०5 अप्रैल २०15 दिन रविवार को प्रातः 8:०० बजे होगी। सफल कन्याओं का साक्षात्कार एवं स्वास्थ्य परीक्षण भी उसी दिन होगा।**

**-सत्यानन्द जी मुंजाल, कुलपति**

**आर्य कन्या गुरुकुल, शास्त्रीनगर, लुधियाना- 141००२**

## आर्यावर्त प्रकाशन, अमरोहा
### द्वारा प्रकाशित पुस्तकें

- **रामायण का वास्तविक स्वरूप**, पृष्ठ-8०, मूल्य-२०/-
- **अर्चना यज्ञ पद्धति**, पृष्ठ-56, मूल्य-16/-
- **अर्चना यज्ञ पद्धति**, पृष्ठ-48, मूल्य-1२/-
- **यज्ञ पद्धति**, पृष्ठ-1२०, मूल्य-35/-
- **बन्दा वैरागी (कवि वीरेन्द्र कुमार राजपूत)**, पृष्ठ-64, मूल्य-16/-
- **साधना 'प्रबन्ध काव्य' (कवि रघुनाथप्रसाद साधक)**, पृ. -384, (सजिल्द), मूल्य-3००/-
- **पं. प्रकाशवीर शास्त्री (डॉ. अशोक कुमार आर्य)**, मूल्य- 5/-
- **तारा टूटा (वीरेन्द्र कुमार राजपूत)**, पृ०-5२, मूल्य- 14/-
- **परिधियों के स्पर्श/यात्रा-यात्रा अन्तःयात्रा (कवि प्रो. विजय कुलश्रेष्ठ)**, पृष्ठ-11२, मूल्य-8०/-
- **प्रो. विजय कुलश्रेष्ठ- अभिनन्दन ग्रन्थ**, (प्रेस में)
- **सत्यार्थ प्रकाश, (महर्षि दयानन्द)**, पृ.-5२० (सजिल्द), मूल्य-16०/- (प्रेस में)
- **आर्यजगत के प्रमुख राष्ट्रीय स्तम्भ**, (शीघ्र प्रकाश्य)
- **आर्यसमाज के प्रखर व्यक्तित्व**, (शीघ्र प्रकाश्य)
- **नवजागरण के पुरोधा- महर्षि दयानन्द सरस्वती**, (शीघ्र प्रकाश्य)
- **समालोचना शास्त्र (कवि रघुनाथ प्रसाद साधक)**, (शीघ्र प्रकाश्य)
- **मानव की जीवन यात्रा** (जे.एन. कौशिक), (शीघ्र प्रकाश्य)
- **आर्य कन्या की सूझबूझ** (शीघ्र प्रकाश्य), पृ०-5२, मूल्य- 14/-

**: लघु पुस्तकें/ट्रैक्ट :**

- हिन्दी के प्रचार-प्रसार में आर्यसमाज का योगदान
  मूल्य- दो सौ रुपये सैंकड़ा
- **यज्ञ और पर्यावरण**, मूल्य- दो सौ रुपये सैंकड़ा
- **दयानन्द सप्तक**, मूल्य- तीन सौ रुपये सैंकड़ा
- **ब्रह्मराशि**, मूल्य- तीन सौ रुपये सैंकड़ा
- **आर्यसमाज** (राष्ट्र कवि रामधारी सिंह 'दिनकर')
  मूल्य- तीन सौ रुपये सैंकड़ा
- **सत्यार्थ प्रकाश क्यों पढ़ें?** मूल्य- एक सौ रुपये सैंकड़ा

**: आर्यावर्त प्रिन्टर्स, अमरोहा द्वारा प्रकाशित पुस्तकें :**

- **वैदिक सिद्धान्त विमर्श** (पं. गंगा प्रसाद उपाध्याय) मूल्य- २5/-
- **सत्यार्थप्रकाश दर्शन** (सत्यार्थ प्रकाश विषयक महत्वपूर्ण आलेखों का संग्रह), मूल्य- 1००/-

# प्राचीन व वर्तमान नाम

भलेराम बैनीवाल

अनेक पुस्तकों के आधार पर रामायणकाल से लेकर आज तक के प्रचलित स्थानों आदि के नाम दिये जा रहे हैं, जो निम्न प्रकार हैं-

क्र.-प्राचीन नाम- वर्तमान नाम

1- अंगद्वीप- सुमात्रा
२- मलयद्वीप- मलाया/मलेशिया
3- यव द्वीप- जावा
4- शंख द्वीप- बोर्नियो
5- कुश द्वीप- अफ्रीका (राम के पुत्र कुश के नाम पर)
6- बराह द्वीप- मेडागास्कर
7- आंध्रालय- आस्ट्रेलिया
8- पाताल- आबासिनिया/अमेरिका (कई लेखक यह मानते हैं)
9- हिमवर्ष- आर्यावर्त/भारतवर्ष, भरतखण्ड
1०- मद्र- दक्षिण रूस (ये ही ईरान में बसे तथा माद्री का भाई शल्य यहीं का था)
11- काल वराह- केतुमाल/नार्वे
1२- आर्य वीर्यान- अजरबेजान
13- निमरी- कुर्दिस्तान (इराक देश में)
14- शिवदान- अफ्रीका का दक्षिण भाग (शिव के नाम पर)
15- अगिरा- अकोला/अंगोला
16- शिवदान- सूडान
17- त्रिपुरी- त्रिपाली (इसे शिव ने भस्म किया था)
18- शिव देश- ओसिस आफ शिव मिश्र (इसे जाटों ने ही बसाया था)
19- दमिश- दमिस्क
२०- चम्पा- इंडोनेशिया
२१- कम्बोज- कम्बोडिया
२२- द्वारावती- श्याम (बर्मा का एक भाग)
२3- कैकस- अफगानिस्तान
२4- जम्बू द्वीप- एशिया
२5- हरिवर्ष- योरूप (हरिवर्ष हरि के नाम पर पड़ा)
२6- मलय देश- (हिमाचल का एक भाग)
२7- मेरन- हिमालय
२8- नेवेलोनिया- इराक (महाभारत काल में आर्ष नाम के प्रदेश में भारतवर्ष का एक प्रान्त था)
२9- पर्शिया- ईरान (यह भी महाभारत काल में आर्ष नाम के प्रदेश में भारतवर्ष का एक प्रान्त था।
3०- वेटिकन- वाटिक (पोप की राजधानी)
31- पर्शिया के चार नाम- सुग्द, मरु, वरवन्धी, निश्य
3२- पुष्करावती- पेशावर (भरत के पुत्र पुष्कर ने बसाया)
33- तक्ष: - तक्षशिला (भरत के पुत्र तक्ष ने बसाई)
34- लवपुर लाहौर (राम के पुत्र लव ने बसाया)
35- असुर, समेटिव अकाद से मिलकर ने तथा सीरिया बसाया (जाटवंश)
36- असुरों की ही एक शाखा फोनिशियन, जो नाविक, वाशिक तथा शिल्पकार थे।
37- सत्यलोक के सामने समेरू पर आज भी वैकुण्ठधाम है।
38- पुर ने पर्शिया बसाया
39- उर- नेबोलिया का एक प्रान्त था। अप्सरा उर्वशी यहीं की थी।
4०- अत्यराती ने ही अरमीनिया बसाया था।
41- वैकुण्ठा के पुत्र वैकुण्ठ थे। वैकुण्ठ धान इनमी राजधानी थी।
4२- वरुण ने धन कुबेर की उपाधि धारण की। इसे ही ब्रह्मा, वरुण, इलाही, इलौही व कर्तार कहते हैं।
43- नासत्य व दस्त्र (ये दोनों रेणु के पुत्र थे, जो अश्विनी कुमार कहलाये)
44- का नाम अमरावती था।
45- एलम- इलावर्त
46- परुष्णी- रावी
47- वितास्ता- झेहलम
48- स्टूद्री- सतलुज
49- असिकनी- चिनाव
5०- विपास- व्यास
51- खाण्डवप्रस्थ- इन्द्रप्रस्थ, दिल्ली
5२- कन्याकुब्ज- कन्नौज
53- पाटलीपुत्र- पटना
54- थानेश्वरम्- थानेसर
55- रोहतांक- रोहतक
56- आर्ष प्रदेश- ईरान व इराक (महाभारत काल में भारतवर्ष का एक प्रान्त)
57- वाहीक प्रदेश/सप्तसंधु/पंचनाद/पंजाब
58- अंगदेश- भागलपुर (यही महाभारत काल के कर्ण की राजधानी थी।
59- ब्रह्मर्षि देश में कुरुक्षेत्र, मत्स्य, पांचाल व शुरसेनक चार देश/प्रान्त आते हैं।
6०- ग्रीस/यूनान/यवनदेश
61- हर्षद्वती- ब्रह्मपुत्र नदी
6२- अबराबेने/अबुल हकमै
63- प्राचीन काल में पूरी पृथ्वी पर सात महाद्वीप इस प्रकार थे- 1- जम्बू, २- शाल्मली, 3- कुश, 4- क्रौंच, 5- पुष्कर, 6- शाक, 7- ल्पक्ष्जन
64- कुशान- कृष्णवंशी थे।
65- बज्र की गांठ को 'गाण्डी' कहा गया। इसी का अपभ्रंश है गाण्डीव व धनुष
66- कुभा- काबुल
67- कृमि कुर्रम
68- जुडिया- इजराइल
69- शाकल- स्यालकोट
7०- और्व- भार्गव के नाम पर ही अरब नाम पड़ा था।
71- कलिंग- ओडिसा
7२- बालिभय- भटिंडा
73- श्रावस्ती- जोर्डन
74- बला नगरी- आलजेरिया
75- गयनी- गजनी
76- काटीवाट- काठियाबाड़
77- पैलिस्टाइन- गुजरात का पालीपाणा ग्राम के नाम पर रखा था।
78- द्रविड़- विशुद्ध आर्य, संदर्भ- वैदिक सम्पति।
79- नील- इण्डेगो
8०- इमली- टेमेरिण्ड- तमरे हिन्द का अपभ्रंश
81- अफगानिस्तान- अपगण
8२- बलोचिस्तान- बलाच्चिस्थान, इनका, केलातनगर
83- मनोलियन/मुगल- गजनी से जाकर मंगोलिया बसे थे।
84- ईरान- आर्यन
85- पारसी- भारतीय क्षत्रिय ही हैं।
86- सरस्वती- ईरान में हरहवती
87- सरयु- ईराम में हरयू
88- झल- अफ्रीका के जूलू
89- घोड़ा- अर्बन के स्थान को अर्ब, उसी का अपभ्रंश अरब है
9०- चीमा- चीना- चीन (चीमा गौत्र से प्रचलित हुआ)
91- जर्मन- जरमान- मान जाटों के नाम पर प्रचलित
9२- अर्जनटाइना- पाण्डुपुत्र अर्जुन के नाम से प्रचलित हुआ।
93- जाटलैण्ड- डेनमार्क के वर्तमान में एक प्रान्त का नाम।

-पूर्व प्रधानाचार्य
राष्ट्रीय अध्यक्ष- जाट महासभा
मकान नं०- 273
एल. सैक्टर- 8, करनाल
(हरियाणा)- 132001
मोबा. : 08053677458

**वैदिक साहित्य विक्रय केन्द्र**

वेद, उपनिषद, दर्शन व सभी प्रकार के वैदिक-आर्ष, सम-सामयिक साहित्य का विशद भण्डार, ध्वज, फोटो, कैलेण्डर तथा कैसेट आदि बिक्री हेतु उपलब्ध हैं।

मूल्य ६०/- किलो

रोग विनाशनी - स्वास्थ्य प्रदायिनी
बहुमूल्य जड़ी-बूटियों के योग से निर्मित मेवा मिश्रित

**शुद्ध हवन सामग्री**

**हरिश्चन्द्र आर्य** अधिष्ठाता - उपदेश विभाग
कार्यालय- काली पगड़ी, अमरोहा (उ.प्र.) फोन : ०५६२२-२६३४१२

## विज्ञापन कॉलम

आर्यावर्त प्रकाशन, अमरोहा द्वारा प्रकाशित

आध्यात्मिक चिन्तन एवं वेदानुशीलन पर आधारित स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती 'वेदभिक्षु' द्वारा लिखित पुस्तक

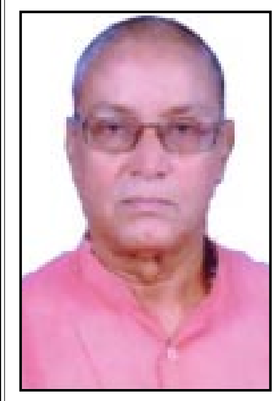

**आयुष्मान् भव**

(दीर्घ अर्थात् लम्बी आयु प्राप्त करो)
1२० पृष्ठ, रंगीन आवरण
: पुस्तक प्राप्ति स्थल :
स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती 'वेदभिक्षु'
आर्यसमाज मन्दिर, बिहारीपुर
बरेली (उ0प्र0)– 243003
चल0 : 094123721179, 9759527485
मूल्य : 25 रुपये

**आज ही मंगाएं यह संग्रहणीय पुस्तक**

**प्रवेश प्रारम्भ हैं**

गुरुकुल में संस्कृत भाषा के साथ-साथ आधुनिक विषयों, जैसे अंग्रेजी, गणित, इतिहास, भूगोल एवं अर्थशास्त्र आदि विषयों का अध्यापन सुयोग्य अध्यापकों द्वारा कराया जाता है। कम्प्यूटर शिक्षा का उत्तम ज्ञान कराया जाता है। छात्रों को उत्तम संस्कार वाले बनाने हेतु प्रतिदिन प्रात: एवं सायं सन्ध्या हवन एवं यौगिक क्रियाएं करायी जाती हैं। सुसज्जित छात्रावास उपलब्ध है। मध्यमा स्तर (इण्टर मीडिएट) की परीक्षाएं उ.प्र. माध्यमिक संस्कृत शिक्षा परिषद्, लखनऊ तथा महाविद्यालय स्तर का पाठ्यक्रम सम्पूर्णानन्द संस्कृत महाविद्यालय, वाराणसी द्वारा संचालित है। संस्था में प्रवेश के लिए छात्र का कक्षा 5 उत्तीर्ण होना अनिवार्य है।

बलदेव नैष्ठिक (प्रबन्धक) मोबा. : ०9997437990
आचार्य इन्द्रपाल (मुख्याधिष्ठाता) मोबा. : ०9411929528
प्रेमशंकर मिश्र (प्रधानाचार्य) मोबा. : ०9411481624
सोमवीर सिंह (इन्चार्ज) मोबा. : ०9412595542

गुरुकुल संस्कृत महाविद्यालय, शुक्रताल (मुजफ्फरनगर) उ०प्र०

**युग-जागृति वैदिक गुरुकुल**
**गुरुग्राम (गुड़गांव) हरियाणा**

**: प्रवेश प्रारम्भ :**

धनुर्वेद के महान आचार्य द्रोण की कर्मस्थली एवं अरावली की सुरम्य पर्वत श्रंखलाओं के मध्य सुविस्तृत भूखण्ड में स्थित श्रद्धेय आचार्य राम किशोर 'मेधार्थी' के कुशल निर्देशन में आधुनिक एवं प्राचीन शिक्षा प्रणाली के अन्तर्गत अत्याधुनिक सुविधाओं से युक्त गुरुकुल संचालित है। प्रवेश परीक्षा उत्तीर्ण होने के पश्चात् ही विद्यार्थी को कक्षा 3,4 व 5 में योग्यतानुसार प्रवेश दिया जा सकता है। यह संस्थान पूर्णत: आवासीय है।

संस्थान में प्राच्य व्याकरण के साथ-साथ अन्य सभी आधुनिक विषयों का नवीन शैक्षिक तकनीकी के द्वारा गहनता से अध्ययन कराया जाता है। शिक्षण संस्थान परिवेश पूर्णत: वैदिक संस्कारों से परिपूर्ण है। इसके साथ ही भोजन, आवास एवं अध्ययनादि की व्यवस्था भी अति उत्तम कोटि की है। समस्त अभिभावक बन्धु इसका लाभ उठाकर अपनी सन्तानों को सुशिक्षित, संस्कारवान, चरित्रवान एवं राष्ट्रभक्त बनाकर परिवार, समाज एवं राष्ट्र के कल्याण का मार्ग प्रशस्त करें।

विशेष : प्रवेश हेतु आवेदन एवं विवरण पुस्तिका संस्थान कार्यालय से किसी भी कार्यदिवस में 1००/- भुगतान कर प्राप्त की जा सकती है। स्थान रिक्त रहने तक ही विद्यार्थी प्रवेश पा सकता है।

सज्जन सिंह, संस्थापक, चलभाष : ०9810545951
आचार्य रामकिशोर मेधार्थी, कुलाधिपति/प्राचार्य, चलभाष : ०8750614501, ०8126500672
ई-मेल: yugjagrti.sajjansingh@gmail.com

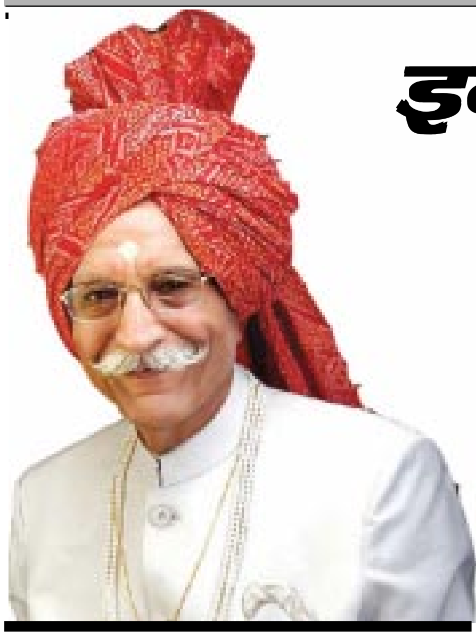

# इन्हें कौन नहीं जानता?

एक जीवन्त व्यक्तित्व, एक दृढ़ निश्चयी, एक महामानव, एक निष्काम कर्मयोगी, एक तपोनिष्ठ साधक- न जाने कितने रूप, कितने आयाम......ये हैं विश्व प्रसिद्ध

## मसालों के शहंशाह, एमडीएच के स्वामी

# 'आर्यरत्न' महाशय धर्मपाल जी

### जन्म दिवस- २७ मार्च २०१५ पर पढ़िए उन्हीं की कलम से यह महत्वपूर्ण आलेख

# सफलता प्राप्ति के मूल-मंत्र

सुख-समृद्धि और सफलता का सारा हिसाब-किताब किस्मत पर नहीं, बल्कि हमारी नीयत और इन्हें हासिल करने के तौर-तरीकों पर निर्भर करता है। कई बातें तो ऐसी भी हैं, जिन्हें लोग कोई खास तवज्जो नहीं देते, जबकि इन्हें नज़रअंदाज करने से ही सारे सपने चकनाचूर हो जाते हैं। हालांकि इनमें कई अच्छी आदतों को शामिल किया जा सकता है, फिर भी मेरे ख्याल में हिम्मत का नंबर पहला है।

आपके पास लाख सुविधाएं-सहूलियतें हों, मगर साहस का अभाव हो, हिम्मत जवाब दे जाए, तो मेरा दावा है कि आप कभी भी अपनी मनचाही मंज़िल हासिल नहीं कर सकते। दूसरी ओर अपनी नीयत में किसी तरह की खोट न रखते हुए हिम्मत वाला हर मंज़िल को अपनी मुट्ठी में कैद कर लेता है। यदि मैं यहां इस विषय को लेकर अपने पिछले जीवन के बारे में थोड़ी चर्चा करूं, तो सबसे पहले यही कहूंगा कि एमडीएच को यह विशाल आकार देने में अच्छी नीयत और हिम्मत की ही सबसे सराहनीय भूमिका रही है। शुरू से ही मेरी यह आदत रही है कि जो करने की ठान लूं, उसे एड़ी-चोटी का जोर लगाते हुए पूरा करके ही दम लेता हूं। चाहे लाख रुकावटें आएं, मैं हार नहीं मानता, क्योंकि रुकावटों के सामने घुटने टेक देना कायरता की पहचान है और कायर कभी भी कामयाबी का हक़दार नहीं होता।

जैसा कि इससे पहले भी मैं कह चुका हूं कि देश विभाजन के बाद दिल्ली आते समय मेरे पास मात्र पंद्रह सौ रुपये थे, जिसका ज्यादातर हिस्सा उन दिनों रोटी-पानी का जुगाड़ करने में ही लग गया। अब आप अनुमान लगा सकते हैं कि बाकी बचे पैसे से कोई छोटा-मोटा कारोबार शुरू करके कोई कितना आगे बढ़ सकता है।

आपका जवाब यही होगा कि इतनी कम पूंजी से शुरू किये गये कारोबार के मुनाफे से तो घर-गृहस्थी भी चलानी मुश्किल होगी। मगर मैं आपके जवाब से सहमत नहीं, क्योंकि उस पूंजी से शुरू किये गये मसालों के कारोबार ने ही एमडीएम को इस मकाम तक पहुंचाया। हां, इसमें साहस और संघर्ष के योगदान को मैं सबसे अधिक महत्वपूर्ण मानता हूं, क्योंकि इसी का यह नतीजा है कि कम पूंजी के बावजूद मैंने पूरे उत्साह के साथ अपने व्यावसायिक सफर की शुरूआत की और इस मकाम तक पहुंचाया कि आज हजारों लोग इससे जुड़कर सुख-चैन की जिंदगी व्यतीत कर रहे हैं।

हम अकेले चल दिए थे
जानिबे मंज़िल मगर,
लोग मिलते गए और
कारवां बनता गया।

कुल मिलाकर मेरे कहने का मक़सद यह है कि नफा-नुकसान एक ही सिक्के के दो पहलू हैं, अतः नुकसान के भय से चुप बैठ जाना उचित नहीं, बल्कि नफा की उम्मीद लिए आगे बढ़ते जाना चाहिए। थोड़ी देर हो सकती है, मगर इतना तय मान लें कि बुलंद हौसले से बढ़ाए गए कदम एक-न- एक दिन अवश्य ही कामयाबी की मंज़िल तक पहुंचा देंगे। यदि सफलता को वटवृक्ष की उपमा दी जाए, तो मैं साहस को इस वटवृक्ष का बीज ही कहना उचित समझूंगा, जो संघर्ष रूपी खाद-पानी से एक दिन विशाल आकार ले लेता है।

साहस रूपी यह सद्गुण आपके अंदर विकसित होकर आपके जीवन की खुशहाली तय कर सके, इसके लिए मैं निम्नलिखित बातों पर अधिक जोर देना चाहूंगा-

1. परमात्मा पर भरोसा रखें- एक बात ध्यान रखें कि ईश्वर के हिसाब-किताब में ज़रा भी हैरफैर नहीं होता, यदि हम सच्ची लगन से अपनी मंज़िल पाने की कोशिश करेंगे तो हमें अवश्य सफलता मिलेगी।

२. किसी से द्वेष न करें- आप किसी भी क्षेत्र से जुड़े हों, सबसे प्रेमपूर्वक बर्ताव करें।

3. विषम परिस्थितियों से घबराएं नहीं- सोने की परख सुनार आग में तपाकर ही करता है। इसी तरह जीवन में भी कई बार विषम परिस्थितियां भी हमारी परख के लिए ही सामने आ खड़ी होती हैं।

4. निराशा से बचें- निरर्थक बातें सोचकर निराशा हावी न होने दें

5. नाकामयाबी से भी सबक लें- हर बार पूरी लगन से परिश्रम करें तथा नाकामयाबी से सबक लें।

निश्चय ही, कुछ भी नहीं है मुश्किल, गर ठान लीजिए।

# अद्भुत है मर्म विज्ञान चिकित्सा

- मर्म चिकित्सा दिलाती है असाध्य रोगों से छुटकारा
- घुटनों की समस्या का निदान ट्रांसपलान्ट के बिना ही सम्भव

## मर्म विज्ञान विशेषज्ञ हैं डॉ. सुनील कुमार जोशी

मर्म चिकित्सा के माध्यम से शरीर को स्वस्थ कर आयु और आरोग्य संवर्धन के संकल्प को पूरा किया जा सकता है। मर्म चिकित्सा तुरन्त कार्यकारी एवं सद्यः फलदायी होने से रोगों को कुछ ही समय में ठीक कर देती है। यह आश्चर्यजनक, विस्मयकारी चिकित्सा पद्धति वेदों से निसृत महर्षि सुश्रुत द्वारा प्रतिपादित अत्यंत गूढ़ एवं गुप्त मर्म विज्ञान आत्मरक्षा, आत्मसाक्षात्कार, आत्मकल्याण हेतु एवं अत्यंत जटिल रोगों के निवारणार्थ रामायण एवं महाभारतकालीन सद्यः फलदायी शल्यापहृत सूत्रों का वैज्ञानिक ज्ञान जो बौद्ध काल में बुद्ध धर्म के प्रचार और प्रसार के साथ दक्षिण एशिया सहित सम्पूर्ण विश्व में एक्यूप्रेशर, एक्यूपंचर आदि अनेक विधाओं के रूप में विकसित हुई। मर्म विद्या भारत वर्ष की अनेक गुप्त विद्याओं में प्रमुखतम है। क्या धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष की प्राप्ति के साधन इस शरीर को स्वस्थ रखने एवं इसको माध्यम बनाकर अनेक सिद्धियों को प्राप्त करने का कोई उपाय है? तो उत्तर में 'मर्म-विद्या' का नाम लिया जा सकता है।

यह जानना आवश्यक है कि मर्म क्या है? चिकित्सकीय परिभाषा के अनुसार शरीर के वह विशिष्ट भाग जिन पर आघात करने अर्थात् चोट लगने से मृत्यु भी संभव है, उन्हें मर्म कहा जाता है। इसका सीधा अर्थ है कि शरीर के यह भाग अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं तथा जीवनदायिनी उर्जा से युक्त हैं। इन पर होने वाला आघात मृत्यु का कारण हो सकता है। इसके अलावा यदि इन स्थानों पर समुचित शास्त्रोक्त चिकित्सा क्रिया विधि का उपयोग किया जाये तो शरीर को निरोगी एवं चिरायु बनाया जा सकता है। साथ ही विभिन्न सुखसाध्य, कष्टसाध्य रोगों से मुक्ति पाई जा सकती है। जहाँ एक ओर मर्म विद्या के द्वारा लौकिक/पारलौकिक सुखों की प्राप्ति संभव है, वहीं इस विद्या के दुरुपयोग से यह घातक भी हो सकती है। मर्म स्थानों पर आधात से प्रतिद्वंदी की मृत्यु भी संभव है।

मर्म चिकित्सा, आयुर्वेदीय शल्य तंत्र का एक ऐसा अनछुआ पृष्ठ है जिसके द्वारा शल्यतंत्र चिकित्सा का सम्पूर्ण परिदृश्य परिवर्तित हो सकता है। जैसे आत्मसाक्षात्कार, समाधि एवं मोक्ष प्राप्ति के साधन योग को जन स्वास्थ्य संवर्धन के महत्वपूर्ण शस्त्र/उपाय के रूप में मान्यता मिल चुकी है। उसी प्रकार मर्म चिकित्सा का उपयोग विभिन्न शस्त्र-साध्य रोगों में अत्यन्त उपयोगी है। मर्म एक सौ सात होते हैं। वे पंचात्मक होते हैं। जैसे- मांसमर्म, सिरामर्म, स्नायुमर्म, अस्थिमर्म और संधिमर्म। वास्तव में मांस,सिरा, स्नायु, अस्थि और संधि के अतिरिक्त मर्म होते ही नहीं। स्वास्थ्य रक्षण एवं स्वास्थ्य संवर्धन हेतु प्रतिदिन स्व-मर्म चिकित्सा करनी आवश्यक है।

अब मर्म चिकित्सा द्वारा निदानित रोगों में स्पोर्ट्स इंजरी, स्पाइनल डिसीजेस/ स्पाइनल कार्ड इंजरी, साइटिका, फोजन शोल्डर, ट्रमिटिक पेरेसिस/ पैराप्लीजिया, कार्पल टनल सिंड्रोम, प्रोलेप्स इन्टरवर्टिब्रल डिस्क, आस्टियो आर्थ्राइटिस/रूमेटाइड आर्थ्राइटिस, टार्टिकोलिस, सर्वाइकल स्पाण्डिलोसिस, हिपेटोमेगाली, स्लीनोमेगाली, न्यूराइटिस, क्रानिक पेन्क्रियेटाइटिस, माइग्रेन, फेसियल, मेरेसिस व टिनिटस आदि अनेक असाध्य और कष्ट साध्य रोग प्रमुख हैं।

**सम्पर्क सूत्र : मृत्युंजय मिशन, ५-माँ आनन्दमयीपुरम्, कनखल, हरिद्वार (उत्तराखंड) दूरभाष : ०१३३४- २४४६६६, २२७६६३**
**चलभाष : ९८९७५२३४६६, ९८९७५३२९९१, ९८९७४५८४४५**
**ई-मेल :- dr_mriduljoshi@yahoo.com**

## 1855 से 1857 तक स्वतन्त्रता संग्राम के 3 वर्षों में विद्रोह की अग्नि को प्रज्ज्वलित करने का श्रेय

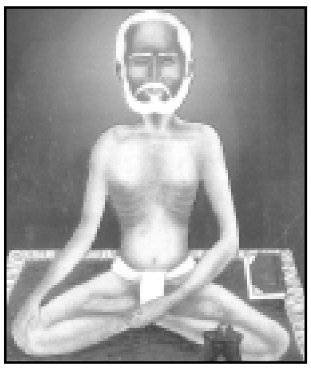

गुरुवर विरजानन्द

# स्वामी आत्मानन्द (160 वर्ष), उनके शिष्य स्वामी पूर्णानन्द (110 वर्ष) उनके शिष्य स्वामी विरजानन्द (79 वर्ष) तथा उनके शिष्य महर्षि दयानन्द सरस्वती

महर्षि दयानन्द

### (पंचायतों के रिकार्ड के आधार पर स्वतन्त्रता आन्दोलन)

सर्व खाप पंचायत सोरम के रिकार्ड के अनुसार पहली सभा सन् 1855 के प्रारंभकाल में हरिद्वार में हुई थी जिसमें बहादुर जफर का पुत्र फिरोज शाह, राय साहब मराठा (संभवतः नाना साहब) बाबा साहब मराठा रंगू वापू अजीमुल्ला खां और रमजान वेग मुख्य रूप से उपस्थित थे कुल उपस्थिति 1500 के लगभग थी। ब्रिटिश सरकार के हिन्दुस्तानी सैनिकों में विद्रोह की भावना का प्रसार करने के लिए कमल के फूल चपाती के वितरण की योजना इसी सभा में पूज्य स्वामी ओमानन्द जी द्वारा तैयार की गई– दूसरी सभा 5 अक्टूबर 1855 को गढ़ गंगा के मेले के अवसर पर मेले के क्षेत्र से कुछ दूरी पर आयोजित की गई। स्वामी पूर्णानन्द इस सभा के प्रधान थे और साई फखरूद्दीन उप प्रधान। फखरूद्दीन पीरान कलियर (हरिद्वार और रूड़की के बीच में स्थित एक मुस्लिम धर्म स्थान) में रहा करते थे और हिन्दू सन्त महात्माओं से उनका अच्छा मेल जोल था। गढ़ गंगा की सभा की उपस्थिति 2500 के लगभग थी। सभा में स्वामी पूर्णानन्द जी ने जो भाषण दिया था मौलवी जहीर अहमद ने इसका सार इस प्रकार लिखा है –

''मुल्क को फिरंगी के भरोसे मत छोड़ो व बेदीन हैं इनका कोई कौल फेल नहीं है यह राजा नहीं बल्कि तिजारती लुटेरे और जरपरस्त हैं। ये हमारे मुल्क की तमाम मखलूक के हर इंसान की जिन्दगी के दुश्मन हैं और ये तुम्हारा खून और गोश्त खा जायेंगे, इनसे बचो– ये तुम्हारी नस्लों को नेस्तनाबूद कर देंगे और हमारे मुल्क में खुद आबाद होकर रहेंगे। इन्हें अपने मुल्क से निकालो।''

तीसरी सभा दस दिन बाद 11 अक्टूबर 1855 को हरिद्वार के पहाड़ में की गई थी इसे भी स्वामी पूर्णानन्द ने आयोजित किया था। इसमें 565 साधु उपस्थित थे जिसमें 195 मुसलमान साधु थे मौलवी जहीर अहमद इस सभा में सम्मिलित हुए कुछ प्रमुख साधुओं के नाम भी दिये हैं जिनमें प्रज्ञाचक्षु, स्वामी विरजानन्द का नाम भी है और साथ ही गोल मुख वाले नौजबान दयानन्द का भी सभा में स्वामी पूर्णानन्द साई फखरूद्दीन ने भाषण दिये थे और लोगों को देश के उत्थान और स्वतंत्रता की प्रेरणा दी थी।

स्वामी पूर्णानन्द जी का निवास कनखल हरिद्वार में था और वे अपने समय के प्रसिद्ध विद्वान एवं सन्त थे उन्हें पूर्ण दास सन्त भी कहते थे उनकी आयु सन् 1857 में 110 वर्ष की थी और सर्व खाप पंचायत के रिकार्ड के अनुसार अंग्रेजों के विरूद्ध विद्रोह की योजना तैयार करने में उनका प्रमुख कर्तव्य था संभवतः यह कल्पना असंगत नहीं है कि मैसूर के सैनिक कमीशन के सम्मुख गवाही देते हुए सीताराम बाबा ने जिसे दस्सा बाबा कहा है वे स्वामी पूर्णानन्द ही थे। शुरू में अपने गुरू स्वामी ओमानन्दजी महाराज के साथ मिलकर अंग्रेजी सरकार के विरूद्ध विद्रोह की योजना बनायी थी और जब पूज्य ओमानन्द अत्यन्त वृद्ध 160 वर्ष के हो गये तो वे ही नाना साहब आदि को मार्ग दिखाते रहे।

सन् 1855 में कुम्भ के अवसर पर स्वामी दयानन्द जी उनसे मिले थे और संन्यास दीक्षा ली थी और उनसे विद्या पढ़ने की इच्छा प्रगट की थी पूर्णानन्द जी वृद्ध थे अतः उन्होंने दयानन्द से कहा था कि स्वामी विरजानन्द जी के पास जाकर विद्या अध्ययन करें, पर साथ ही यह भी कहा था कि विद्या पढ़ने से पहले देश के सुधार तथा स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए कार्य में जी जान से जुट जाओ। भारतवर्ष की छोटी बड़ी सभी रियासतों को संगठित कर स्वतन्त्रता की शंखनाद करें। इसके बाद स्वाधीनता संग्राम के लिए जो सभाएं हुईं दयानन्द उसमें सम्मिलित होते रहे संवत 1913 सन 1856 में जिस सभा में मीर मीरासी द्वारा लिखित विवरण दिया गया है स्वामी दयानन्द उसमें स्वयं उपस्थित थे।

**मीर मीरासी की रिपोर्ट**

सन् 1856 सं0 1913 को एक पंचायत मथुरा के तीर्थगृह पर मुनक्किद हुई। उसमें हिन्दू मुसलमान और दूसरे मजहब के लोगों ने शिरकत की थी, इस पंचायत में एक नाबीना हिन्दु दर्वेश को लाया गया था एक पालकी में बैठाकर उनके आने पर सब लोगों ने उनका अदब किया जब वह एक चौकी पर बैठ गये तब हिन्दू मुसलमान फकीरों ने उनकी कदम बोसी की। इसके बाद सब पंचायती लोगों ने इनका अदब किया – सबके अदब के साथ नाना साहब पेश हुए– मौलवी अजीमुल्ला खान, रंग बापू और शहनशाह बहादुरशाह का शहजादा इन सबने अदब में आकर अशरफियां पेश कीं। इसके बाद एक हिन्दू व एक मुसलमान फकीर ने कहा कि हमारे आका की जुबानें मुबारक से जो तकरीर होगी उसे तसल्ली के साथ सब लोग सुनें और वह इस मुल्क के लिए बहुत मुफीद साबित होगी और यह वली उल्लाह साधु बहुत–बहुत जबानों का आलिम तथा हमारा और हमारे मुल्क का बुजुर्ग है। खुदा की मेहरबानी से ऐसे बुजुर्ग हमें मिले हैं यह खुदा का हम पर बड़ा एहसान है।

हरिश्चन्द्र आर्य, अमरोहा

दर्वेश की तकरीर का आगाज– सबसे पहले उन्होंने खुदा की तारीफ की फिर उर्दू में उसका तर्जुमा किया, इस बुजुर्ग ने यह कहा था कि आजादी जन्नत और गुलामी दोजख है अपने मुल्क की हुकूमत गैर मुल्की हकूमत के मुकाबले में हजार दर्जा बेहतर है। दूसरों की गुलामी हमेशा बेइज्जती और बेशर्मी का बाईस है हमें किसी कौम से, किसी मुल्क से कोई नफरत नहीं है, हम तो खल्के खुदा की बहबूदी के लिए खुदा से दुआ मांगते हैं मगर हुक्मरान कौम खासकर फिरंगी जिस मुल्क में हकूमत करते हैं उस मुल्क के बाशिन्दों के साथ इन्सानियत का वर्ताव नहीं करते और कितनी भी अपनी अच्छाईयों की तारीफ करें मगर उस मुल्क के बाशिन्दों के साथ मवेशियों से गिरा हुआ बर्ताव करते हैं। खुदा की खलकत में सब इंसान भाई–भाई हैं, मगर गैर–मुलकी हुक्मरान उन्हें भाई न समझकर गुलाम समझती है। किसी भी मजहबी किताब में ऐसा हुक्म नहीं है कि अशरफुल मखलूकात के साथ दगा की जाये अल्लाह के हुक्म की खिलाफ वर्जी की जाये, इस वास्ते लोगों का कोई ईमान है और न उनकी शान है, फिरंगियों में बहुत सी अच्छी बातें भी हैं मगर सियासी मामले में आकर वह अपने फेल बेजा को न समझकर फौरन बदल जाते हैं और हमारी अच्छाई और नेक सिलावी फौरन ठुकरा देते हैं इसकी असल वजूहात यह है कि हमारे मुल्क को अपना वतन नहीं समझते यही सब कमी का वाइस है।

हमारे मुल्क का बच्चा–2 उनकी खैर ख्वाही का दम भरे फिर भी वह अपने वतन के कुत्तों को हमारे इन्सानों से अच्छा समझते हैं यही सब कमी का वाईस है– उन्हें अपने ही वतन से मुहब्बत है इसलिए हम सब वाशिन्दगाने हिन्द से इल्तिजा करते हैं कि जितना वह अपने मजहब से मुहब्बत करते हैं उतना ही इस मुल्क के हर इंसान का फर्ज है कि वह वतन परस्त बने और मुल्क के हर बाशिन्दे को भाई–भाई जैसी मुहब्बत करे तुम्हारे दिलों में वतन परस्ती आ जायेगी। हिन्द के रहने वाले सब आपस में हिन्द भाई हैं और बहादुर शाह शहनशाह है ।

सन् 1856 में ब्रिटिश शासन के विरूद्ध विद्रोह की तैयारियां तेजी के साथ हो रही थीं स्वामी विरजानन्द भी उसी के लिए कार्य कर रहे थे इसी सिलसिले में वह सर्व खाप पंचायत में आये थे उनके व्याख्यान से लोगों में उत्साह का संचार हो गया। और बहुत से युवक अग्रेंजों के खिलाफ लड़ाई के लिए सेना में भरती होने को तैयार हो गये, बहुत सी युवतियों ने भी स्वाधीनता संग्राम में भाग लेने के लिए अपनी सेवा अर्पित की थी । सर्वखाप पंचायत के रिकार्ड में उन युवतियों के नाम भी सुरक्षित हैं।

मुद्रण/प्रकाशन हेतु सम्पर्क करें

**आर्यावर्त प्रिन्टर्स, अमरोहा**

ट्रैक्ट, लघु पुस्तक, संदर्भ ग्रन्थ, काव्य संग्रह तथा बहुरंगी पैम्फलेट, पोस्टर, विजिटिंग कार्ड आदि के प्रकाशन की उचित मूल्य पर सुविधा उपलब्ध है। इच्छुक महानुभाव/संस्थाएं प्रकाशन हेतु तुरन्त सम्पर्क करें।

-व्यवस्थापक, आर्यावर्त प्रिन्टर्स, गोकुल विहार, श्रीराम इं० कालेज के पीछे, अमरोहा, फोन : (05922–262033/ 09758833783/ 08273236003)

वार्षिकोत्सवों, आर्य पर्वो तथा विभिन्न कार्यक्रमों में भजनोपदेश के लिए सम्पर्क करें

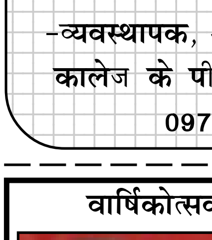

**पं. घनश्याम प्रेमी आर्य**

ग्राम- मुस्तफाबाद, पो०- जानसठ

जि०- मुजफ्फरनगर (उ०प्र०)- 251314

चलभाष : 09927728710

# कम्प्यूटर हेतु सर्वाधिक वैज्ञानिक भाषा 'संस्कृत'?

पं० वेदप्रकाश शास्त्री

'हिन्दू सभा वार्ता' दिल्ली 19 से २5 नवम्बर २014 के अंक में पृष्ठ 1२ पर मान्य 'टी०ए० विश्व' का लेख 'संस्कृत विश्व की धरोहर' प्रकाशित हुआ है। संस्कृत की महत्ता बताते हुए वे कहते हैं-

''नासा के वैज्ञानिकों का मानना है कि कम्प्यूटर अपनी अधिकतम सीमा का उपयोग संस्कृत भाषा के माध्यम से ही करेगा, क्योंकि कम्प्यूटर के लिए सर्वाधिक वैज्ञानिक भाषा संस्कृत ही है।''

लेखक ने यह स्पष्ट नहीं किया कि संस्कृत भाषा कम्प्यूटर में किस प्रकार सहायक है। क्या नासा के सभी वैज्ञानिक संस्कृत जानते हैं? क्या उन्होंने संस्कृत का अध्ययन किया है? जहां तक मेरा विचार है, एक भी वैज्ञानिक संस्कृतज्ञ नहीं होगा। यदि अपवाद रूप में कोई एकाध जानता भी हो, तो उसकी संस्कृत का वैज्ञानिक अनुसंधान में कोई भी योगदान नहीं होगा, न ही उसकी कोई उपयोगिता होगी।

वस्तुत: भाषा तो विचारों की अभिव्यक्ति का माध्यम है। किसी भी वस्तु, सिद्धान्त आदि का अनुसंधान करने के लिए वैज्ञानिक की अपनी भाषा भी सहायक हो सकती है। भारत के 'इसरो' वैज्ञानिकों ने अनेक अनुसंधान, आविष्कार किये हैं। पूर्व राष्ट्रपति डॉ० अब्दुल कलाम तो मिसाइल मैन के नाम से विख्यात हो गये। वे संस्कृत नहीं जानते। मंगलयान प्रेषित करने वाले वैज्ञानिक भी संस्कृत से अनभिज्ञ हैं, फिर भी उन्होंने अनुसंधानात्मक प्रतिभा का सिक्का जमा दिया। इनमें भी निर्देशन, सन्देश, प्रेषण, ग्रहण, विश्लेषण आदि कार्य कम्प्यूटर द्वारा ही सम्पन्न होते हैं। क्या इनके संचालन, निर्देशन, संदेश प्रेषण-ग्रहण आदि में संस्कृत किसी प्रकार सहयोगी रही है? मेरे विचार से नहीं।

विभिन्न प्रकार के रोबोट, पायलट रहित विमान, ड्रोन भी तो अपने निर्देशित कार्यों को करते हैं, और वह भी अत्यंत सटीक। यह भी तो वैज्ञानिकों का अनुसंधान है। वर्तमान समय में कल-कारखानों, कार्यालयों में विभिन्न प्रकार के कार्य कम्प्यूटरों द्वारा ही सम्पन्न होते हैं। इन सभी विभागों, कार्यालयों में प्रयुक्त विभिन्न प्रकार के कम्प्यूटरों में क्या संस्कृत की आवश्यकता अनुभव की गयी? सम्भवत: नहीं।

एक प्रश्न और, क्या वैज्ञानिकों को इस संस्कृत ज्ञान के बिना, उनके कार्यों में कोई गतिरोध आया? यदि हां, तो क्या उन्होंने संस्कृत सीखी, और कहां तक, कितनी? केवल व्यावहारिक संस्कृत अथवा शास्त्रीय? यदि नहीं, तो फिर भला नासा के वैज्ञानिकों को इस प्रकार के बेतुके बयान देने की आवश्यकता क्यों पड़ी कि ''नासा ..... कम्प्यूटर में अपनी अधिकतम सीमा का उपयोग संस्कृत भाषा के माध्यम से करेगा।''

वस्तुत: कम्प्यूटर के हार्डवेयर अथवा सॉफ्टवेयर की रचना, कार्य की आवश्यकता/उद्देश्य के अनुसार होती है। इसमें वैज्ञानिक रचनात्मक प्रतिभा कौशल कार्य करता है, न कि भाषा। भाषा तो उन वैज्ञानिकों के पारस्परिक विचार-विमर्श हेतु सहायक होती है। वह कोई भी हो सकती है।

अन्य अनेक देशों में भिन्न-भिन्न भाषाएं भी हो सकती हैं। परन्तु संस्कृत के दर्शन कहीं नहीं होंगे। यह कटु सत्य है, जिसे संस्कृतविदों को स्वीकार करना ही चाहिए।

वैसे किसी भी भाषा में सॉफ्टवेयर का निर्माण करके उसका अनुवाद विभिन्न भाषाओं में किया जा सकता है और हो भी रहा है। एटीएम आदि में अंग्रेजी, हिन्दी का विकल्प विद्यमान है। मोबाइल फोन में भी हिन्दी, अंग्रजी की सुविधा है।

संस्कृत के अनेक विद्वान अपने व्याख्यानों में संस्कृत की महत्ता का बखान करते हुए उसे कम्प्यूटर में सहायक बताते हैं। यह तो कबीर की इस उक्ति के अनुसार ही प्रतीत होता है कि- ''बातन की बातन में बैकुण्ठ बखानें''।

कुछ ऐसे ही संस्कृत व्याख्याता भी हैं, जो ''बातन ही बातन में कम्प्यूटर में संस्कृत बखानें'' को चरितार्थ कर रहे हैं।

अनेक पत्र-पत्रिकाओं में लेख भी लिखे जाते हैं। परन्तु आज तक कोई भी ऐसा लेख देखने में नहीं आया, जिसमें कम्प्यूटर में संस्कृत के प्रयोग की विधि बतायी गयी हो। किसी पुस्तक का भी उल्लेख नहीं किया गया है, जिसमें बताया गया हो कि अमुक प्रकार से संस्कृत कम्प्यूटर में सहायक है। ऐसे करतल ध्वनीय व्याख्यानों और प्रशंसनीय मात्र लेखों से भला क्या लाभ।

क्या ही अच्छा हो, कम्प्यूटर रचना विज्ञान से परिचित कोई संस्कृतज्ञ सज्जन इस पर विस्तृत प्रकाश डालें। ऐसे विद्वानों की जानकारी दें, जिन्होंने इस पर अनुसंधान किया हो। उनकी क्या उपलब्धि रही? संस्कृत किस प्रकार सहायक सिद्ध हुई?

विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में इसे भेजने का प्रमुख उद्देश्य यही है कि शायद कहीं से कुछ ज्ञात हो सके। केवल कोरे व्याख्यानों से बात नहीं बनेगी। विद्वानों की टिप्पणियां/प्रतिक्रियाएं सादर आमंत्रित हैं।

-4-ई, कैलाश नगर,
फाजिल्का, पंजाब
मो. : 09463428299

## महर्षि दयानन्द सरस्वती की जयन्ती (14-२-२015) पर विशेष

# आर्यजन विचार करें और उत्तर दें

- क्या जनगणना में महर्षि दयानन्द को आर्य और वैदिक धर्मी लिखा गया था?
- महर्षि दयानन्द ने वेदों के प्रचार-प्रसार के लिए विक्रमी संवत् 1932 तदनुसार 1875 ई० में मुम्बई में आर्यसमाज की स्थापना की थी।
- आज विश्व के अधिकांश देशों में आर्य समाज और महर्षि दयानन्द के समर्थक-प्रशंसक हैं और कार्य कर रहे हैं।
- परतंत्र भारत के वायसराय ने निश्चय किया था कि प्रथम जनगणना 1881 में होगी।
- महर्षि दयानन्द ने सर्वत्र, आर्यो- समर्थकों को बार-बार कहा था कि वे सरकारी फार्म में जाति के खाने में आर्य, और धर्म के खाने में वैदिक धर्म ही लिखाएं, ताकि पता चले कि आर्यों की संख्या कितनी है? उनकी सोच सही थी।
- उन्होंने तत्कालीन वायसराय से भेंट करके और पत्र लिखकर अवश्य कहा होगा कि सरकारी फार्म में आर्य और वैदिक धर्म भी लिखा जाए।
- 1881 में जब सरकारी कर्मचारी फार्म लेकर घरों में आए, तब आर्यो ने उनसे कहा कि उनके नाम, जाति के खाने में आर्य और धर्म के खाने में वैदिक धर्म लिखें।
- सरकारी कर्मचारियों ने उत्तर दिया कि ऐसा नहीं हो सकता है, क्योंकि फार्म में जाति के खाने में हिन्दू, मुस्लिम, ईसाई, सिख, जैन और बौद्ध ही लिखने की व्यवस्था है।
- उनका उत्तर सुनकर आर्यो को खेद हुआ और उन्हें मजबूरी में हिन्दू एवं हिन्दू धर्मी ही लिखाना पड़ा।
- इससे स्पष्ट है कि वायसराय ने महर्षि दयानन्द का अनुरोध स्वीकार किया।
- बताया जाता है कि पूरे जीवन काल में महर्षि दयानन्द के मुख से केवल एक बार हिन्दू शब्द बोला गया था, अन्यथा वे सदैव आर्य शब्द ही कहते थे।
- जनगणना के सरकारी फार्म में आर्य और वैदिक धर्म का खाना (कॉलम) न होने से निश्चित रूप से उन्हें बहुत बुरा लगा होगा, और खेद भी हुआ होगा।
- इससे सपष्ट होता है कि महर्षि दयानन्द का प्रयास असफल रहा। उन्हें हिन्दू शब्द कतई पसन्द नहीं था, क्योंकि यह शब्द भारतीय नहीं है।
- 1881 का जनगणना रिकार्ड यदि देखा जाए, तो उसमें आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती को हिन्दू और हिन्दू धर्मी ही लिखा गया होगा। यह देखकर और सुनकर बड़ा विचित्र लगता है।

## : प्रतिक्रिया :

(1) 19०8 में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली- 11०००२ में बनी। अब 1०6 वर्ष हो चुके हैं, किंतु हमने कभी नहीं सुना या पढ़ा कि जनगणना के फार्म में आर्य और वैदिक धर्म का खाना (कॉलम) भी होने की मांग की गयी हो।

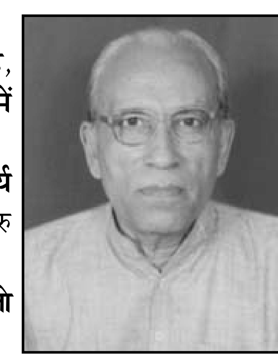

(२) समानान्तर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली- 11०००1 में है, जो कई वर्षो से विदेशों में भी आर्य महासम्मेलन बेशक करती है, किंतु इस बारे में कभी इसने मांग ही नहीं की है।

(3) 1977 में चौधरी चरण सिंह ढाई वर्ष तक केन्द्रीय गृहमंत्री रहे। पक्के आर्य समाजी होते हुए भी इन्होंने सरकारी फार्म में आर्य और वैदिक धर्म का कालम शुरु नहीं किया और न ही सार्वदेशिक सभा ने उन्हें ज्ञापन देकर मांग की।

(4) स्मरण रखें कि जो मांगत है वही पावत है। इतनी उदासीनता से 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' का नारा कैसे पूरा हो सकता है?

-इन्द्रदेव सिद्धान्त भूषण, पूर्व प्रधान, नगर आर्य समाज,
18/186, टीचर्स कॉलोनी, बुलन्दशहर, मोबा. : 08958778443

# धर्मनिरपेक्ष राज्य में कोई भी अल्पसंख्यक क्यों?

नई दिल्ली, प्रेट्र। धर्मान्तरण और पुन: धर्मान्तरणों पर उठ रहे विवादों के बीच सरकार ने अल्पसंख्यकों को लुभाने के लिए मिशन सशक्तिकरण लाने की तैयारी की है। इसके तहत देश भर में अल्पसंख्यकों से जुड़ी केन्द्रीय योजनाओं की आधारभूत स्तर पर समीक्षा की जाएगी।

-एक समाचार

: टिप्पणी :

(1) जब मोदी गुजरात के मुख्यमंत्री रहे, तब तो वे केन्द्र की सप्रंग सरकार द्वारा भेजी गयी छात्रवृत्ति को अल्पसंख्यक समुदाय के छात्रों को बांटने के लिए तैयार नहीं होते थे।

(२) अब संप्रंग सरकार द्वारा चलाई जा रही अल्पसंख्यकों के हितार्थ सभी योजनाओं को पूरी तरह से चलाने की तैयारी की जा रही है।

(3) मोदी जी, याद रखिए कि कांग्रेस ने खूब तुष्टीकरण किया, फिर भी 1945-46 के चुनावों में कांग्रेस को मुस्लिमों के केवल सात प्रतिशत वोट ही मिले। 84 प्रतिशत वोट देने वाले हिन्दुओं को अंगूठा दिखा दिया, और खंडित भारत का संविधान हिन्दू विरोधी बनाकर देश विभाजन के दोषियों की सारी मांगें मानकर उन्हें पुरस्कार दे दिया।

(4) यदि आप भी मुस्लिमों को खुश करने में लग गये, तो २019 में बूढ़ी कांग्रेस आपको सत्ता में नहीं आने देगी, क्योंकि उसकी जड़ें बहुत मजबूत हैं।

(6) निष्पक्ष भाव से देखा जाए, तो धर्मनिरपेक्ष देश में किसी भी समुदाय को अल्पसंख्यक नहीं माना जाना चाहिए।

(7) यदि आप कई समुदायों को अल्पसंख्यक मानना ठीक समझते हैं, तो देश का नाम हिन्दुस्थान कीजिए और हिन्दू धर्म को सरकारी धर्म घोषित करें, क्योंकि बहुसंख्यकों की उपेक्षा क्यों की जा रही है।

-डॉ० गिरीश चन्द्र गुप्ता, अतिरिक्त संरक्षक,
सावरकारवाद प्रचार सभा, बुलन्दशहर, मो० : 9456047517

# धन तो दुख का भाजन ही है

सारे संग्रहों का अन्त विनाश है, सारी उन्नतियों का अन्त पतन है, संयोग का अन्त वियोग है, और जीवन का अन्त मरण है।

उत्थान और पतन को स्वयं ही प्रत्यक्ष देखकर यह निश्चय करें कि यहां सब कुछ अनित्य है और दुखरूप है।

धन के उपार्जन में दुख होता है, उपार्जित धन की रक्षा में दुख होता है, धन के नाश और व्यय में भी दुख होता है। इस प्रकार दुख के भाजन बने हुए धन को धिक्कार है। (महाभारत से)

-मोहनलाल मगो
पी-65, पाण्डव नगर
दिल्ली-91

आर्यावर्त केसरी में अपने संस्थान, प्रतिष्ठान का विज्ञापन देकर लाभ उठाएं।

जल ही जीवन है, इसे व्यर्थ न बहाएं।

# रामनौमी पर विशेष

## (ब्र० कृष्णदत्त के प्रवचनों से)

सुमनकुमार वैदिक

मेरी प्यारी माताओं! तुम्हें आज राम के मन्दिर बनाने की, उनमें पूजा करने की आवश्यकता नहीं, क्योंकि भगवान राम मन्दिर में कैद नहीं होना चाहते। वह पुनः उस माता कौशल्या को ढूंढ रहे हैं, जो उन्हें अपने गर्भ से उत्पन्न कर दे।

भगवान राम, जिनके जन्म को आठ लाख वर्ष से भी अधिक हो चुके हैं, और आज तक उनको और उनसे उनकी माता को स्मरण किया जाता है। जिसने अपने गर्भ में संसार में क्रीड़ा करने वाले साधारण मनुष्य नहीं, भगवान राम जैसा पुत्र उत्पन्न किया, जो एक महान माता का महान पुत्र था।

जब राजा दशरथ के कोई संतान नहीं हुई, तो उन्होंने महर्षि श्रृंगी के द्वारा पुत्रेष्टि यज्ञ कराया। पुत्रेष्टि यज्ञ का अधिकारी वह होता है, जो आयुर्वेद का महान ज्ञाता हो। श्रृंगी ऋषि को 84 वर्ष का आयुर्विद का ज्ञान था।

यज्ञ की समाप्ति पर राजा ने दक्षिणा दी। माता कौशल्या भी दक्षिणा देने लगीं, तब ऋषियों ने कहा- हे देवी! हम तुमसे मुद्रा नहीं चाहते। हम संकल्प चाहते हैं। इस समय संसार में अराजकता आ गयी है, जिसे समाप्त करने के लिए महापुरुषों की आवश्यकता है। हे देवी! हम चाहते हैं कि तुम्हारे गर्भ से ऐसी संतान उत्पन्न हो, जिसी आभा चन्द्रमा की भांति शीतल और महान बनकर अमृत को बहाने वाली हो। जिससे राष्ट्र और समाज महान पवित्रता को प्राप्त हो जाए। माता कौशल्या ने कहा कि "हे प्रभु! जो भी दक्षिणा आप मेरे से मांगेगे, मैं वही प्रदान करूंगी, क्योंकि दक्षिणा का संबन्ध हृदय से है, और हृदय का श्रद्धा से। उन्होंने कहा कि हे भगवन! मैं तपस्या में ही अपने जीवन को व्यतीत करूंगी। मैं इस तपस्या काल में राष्ट्र का अन्न ग्रहण नहीं करूंगी।" यह उन्होंने संकल्प लिया। स्वयं कला-कौशल करने से जो द्रव्य आता, उसको वह ग्रहण करतीं, जिससे उनके मस्तिष्क में महान तरंगों का जन्म होने लगा।

पुत्रेष्टि यज्ञ के पश्चात् माता कौशल्या के गर्भ-स्थापना हो गयी। वह महान शिशु को जन्म देना चाहती थीं। उसके लिए वनों में से सोमलता और अन्य औषधियां लातीं। उसे पान कर अपने में विचित्रता को अनुभव कर, गर्भ में जो शिशु था, वह महान पवित्रता को प्राप्त होता जा रहा था।

गर्भावस्था काल में माता कौशल्या ने महर्षि श्रृंगी के आश्रम में जाकर प्रश्न किया कि मेरे गर्भस्थल में शिशु का प्रवेश हो गया है, अब मैं क्या करूं? उन्होंने कहा कि तुम त्याग-तपस्या वाले अन्न को ग्रहण करें। जिन विचारों से अन्न को भोजनालय में तपाओगी, उन्हीं विचारों का वह अन्न बनेगा। उसको पान कर शिशु का निर्माण होता है। तृतीय महा के पश्चात् पुनः श्रृंगी ऋषि से मताा कौशल्या ने पुछा कि अब क्या करूं? उन्होंने कहा कि प्राणायाम करते हुए चित्त के मण्डल का दर्शन कर चतुर्थ महा से गर्भ की आत्मा से वार्ता कर सकती हो। पन्द्रह दिन ऋषि आश्रम में रहकर उन्होंने प्राणायाम का अभ्यास कर, वापस गृह में आयीं।

राजा दशरथ को पता चला कि कौशल्या जी राष्ट्रीय अन्न नहीं खा रही हैं, तो कौशल्या से पूछा। माता कौशल्या ने कहा कि "राष्ट्र को जो अन्न होता है, वह रजोगुण और तमोगुण से सना होता है, इस कारण वह पवित्र नहीं होता। इसलिए मैं उसे ग्रहण नहीं कर रही हूं।" राज दशरथ ने कहा कि हे देवी! मैं तुम्हारे व्याख्यान को परास्त नहीं कर पाऊंगा, परन्तु मेरी प्रार्थना है कि तुम अन्न को ग्रहण करो। माता कौशल्या ने कहा- प्रभु! मैं इस अन्न को ग्रहण नहीं करूंगी, क्योंकि मैंने आचार्यो को यज्ञ में यह दक्षिणा दी है। दक्षिणा का संबन्ध हृदय से होता है, और हृदय से ही उद्घोष होता है।

राजा दशरथ ने विचार किया कि यह मेरे विचार को स्वीकार नहीं कर रही। वशिष्ठ जी और माता अरुन्धती ही इनको अन्नादि ग्रहण करा सकते हैं। अतः वह वशिष्ठ आश्रम में पहुंचे। जहां वह आपस में चर्चा कर रहे थे कि गृह वही पवित्र होता है, जहां पति-पत्नी रात्रि में परमात्मा के जगत को निहारते हुए महापुरुषों के गुणों की चर्चा करते हैं। तपस्वी उसे कहते हैं, जिसका मन, वचन, कर्म एक होता है। वह व्यवहार तप बन जाता है। आत्मा, परमात्मा, प्रकृति के स्वरूप को जानने का प्रयत्न करना मानसिक तप, और जब आत्मा-परमात्मा से वार्ता प्रकट करने लगता है, तो वह आत्मीय तब बन जाता है। व्यावहारिक तपस्वी मानव, जो मन, वचन, कर्म से स्वच्छ रहता है, अपने को नम्र बना पृथ्वी लोक को विजय कर लेता है। मानसिक तपी कहता है कि मैं आत्मा हूं। परमात्मा मेरा संचालन कर रहा हूं, और प्रकृति रूपी गाड़ी में मैं विद्यमान हो, लोकों में विचरण कर रहा हूं। महाराजा दशरथ को देखकर महर्षि वशिष्ठ ने आने का कारण पूछा। उन्होंने कहा कि आप कौशल्या जी को शिक्षा दो, क्योंकि वह गर्भवती है, तथा राष्ट्र का अन्न नहीं ले रही हैं, वह भूखी रहती हैं। महर्षि वशिष्ठ और माता अरुन्धती कौशल्या जी के समीप पहुंचे, और उनसे पूछा कि तुम राष्ट्र का अन्न क्यों नहीं ग्रहण नहीं कर रही हो? माता कौशल्या ने कहा कि मैं ऐसी संतान को जन्म देना चाहती हूं, जो त्याग और तपस्या में अपने जीवन को व्यतीत करें। ऋषि ने कहा कि पुत्री हमारी इच्छा है कि तुम राष्ट्र के अन्न को ग्रहण करो। कौशल्या ने कहा कि मैं राष्ट्र के अन्न को ग्रहण नहीं करूंगी, यह मेरा संकल्प हो गया है। मैं अपने संकल्प को नष्ट नहीं करूंगी। मैं स्वयं कला-कौशल करके अन्न लाती हूं, उसी को मैं पान करती हूं। यही मेरा संकल्प है। मैं चाहती हूं मेरे गर्भ से ऐसी सन्तान, ऐसी दिव्य आत्मा जन्म ले, जो इस संसार को महान बना सके। आपको प्रतीत हे कि संकल्प में ही संसार है। जब मानव का संकल्प समाप्त हो जाता है, तो उसकी प्रतिभा नष्ट हो जाती है। मेरी प्रतिभा नष्ट नहीं होनी चाहिए। हे प्रभु! सर्वत्र ब्रह्माण्ड में मुझे प्रभु का संकल्प का ही दृष्टिपात आता है। जैसे प्रभु का संकल्प समाप्त होने पर प्रलय हो जाती है, अंधकार आ जाता है, उसको ब्रह्म की रात्रि कहते हैं।

माता कौशल्या ने कहा कि हे ऋषिवर! मैं अपने संकल्प को एक कारण से समाप्त कर सकती हूं। यदि आप दोनों पति-पत्नी मन को समाप्त कर दो तो प्रभु मैं भी अपने संकल्प को समाप्त कर सकती हूं। वशिष्ठ और अरुन्धती मौन हो गये। उन्होंने राजा से कहा- जैसी कौशल्या की इच्छा, इनके संकल्प को नष्ट न करो।

माता के गर्भ से राम को जन्म देना होगा, तो कौशल्या जैसा अवश्य बनना होगा। माता कौशल्या, जो त्याग में स्वयं कला-कौशल करके तप कर रही थीं, दार्शनिकता आध्यात्मिकता में अपने को ले जा रही थीं और गर्भ में पुत्र पनप रहा था। आनन्द और ज्ञान को प्राप्त कर रहा था।

पुत्रेष्टि यज्ञ के समय माता कौशल्या और तीनों राजलक्ष्मियों ने संकल्प किया कि जीवन यज्ञमय होगा।

माता कौशल्या यज्ञ करतीं,उ वर्चोसि अग्नि की पूजा करतीं, आत्मा को चेतन करने के लिए उन्होंने अपने जीवन को क्रियात्मक बनाना प्रारम्भ किया। प्रातःकाल अग्न्याधान करते हुए कहती- हे अग्ने! तू प्रकाश है, तू मेरे अन्तःकरण का प्रकाश है। हे अग्ने तेरी ज्योति ऊर्ध्व में रमण करती है। हे अग्ने! तू सप्त जिव्हा वाली है। तू संसार का कल्याण करती है।

गर्भवती कौशल्या राष्ट्र का अन्न और जलपान नहीं करती, न ही राष्ट्र का वस्त्र ही धारण करती थी। गुणक ऋषि महाराज को उन्होंने कहा था। हे ऋषि मैं अपने गर्भ से ऊंचा बालक को जन्म देना चाहती हूं, श्रेष्ठ पुत्र चाहती हूं। मेरे हृदय की वेदना है कि मेरे गर्भस्थल से उत्पन्न होने वाले बालक के शरीर में ऐसे अन्न का अंकुर न चला जाए, जिससे वह राजसी बन जाए। ऐश्वर्य में जाकर वह प्रजा का कल्याण नहीं कर सकेगा। यदि हम शुद्ध अन्न और शुद्ध विचारों से ऊंचें बाल को जन्म न दे सके, तो हमारे जीवन को धिक्कार है।

माता कौशल्या का तप व्यर्थ नहीं गया। उन्होंने भगवान राम जैसे पुत्र को जन्म दिया। भगवान राम का जीवन कितना उदार था, उनमें कितना विवेक, त्याग और तप था। आठ लाख वर्षो से भी अधिक हो गये हैं, आज तक माता कौशल्या को माता कहा जाता है। यदि माता कौशल्या के राम जैसा पुत्र नहीं होता, तो कौन उनको माता कहता? यदि माता तप नहीं करती, तो राम कैसे जन्म लेते? हमने उन्हें अवतार मानकर माता कौशल्या के तप के महत्व को समाप्त कर दिया। मोबा. : 946274350

## ग़ज़ल

प्रकाश प्रजापति

कानूनों के कान नहीं हैं क्या बोलें
संसद में समाधान नहीं है क्या बोलें
नेता कोई मिलता नहीं ईमानदार
जनता बेईमान हुई है क्या बोलें
लोकतंत्र और लोकराज का शोर बहुत
लोक की पर पहचान नहीं है क्या बोलें
काजल कांन बिन्दिया हो गयी बीती बात
'स्वीसलैस' परिधान कई हैं क्या बोलें
बहुत हो गया अब चुप भी कर ऐ 'प्रकाश'
वक्त किसी का गुलाम नहीं है क्या बोलें

-सुबोधनगर, अमरोहा

## हे सत्य कहां छिपे हो तुम

डॉ० रीता

हे सत्य! कहां छिपे हो तुम
अपने से ही मुंह मोड़े।
प्रतिद्वन्दी ये झूठ तुम्हारा,
तुम्हारे ही सिर चढ़ बोल रहा है;
तुम्हें अपनाने वालों के इस देश में
अपनी ही धुन चला जा रहा है।
क्यों उसके ही आगे,
अपनी अस्मिता खोए हो तुम।
हे सत्य! .....
क्षेत्र सामाजिक हो या धार्मिक,
आर्थिक हो या राजनीतिक,
प्रत्येक स्थान पर,
तुम्हारे ही प्रतिद्वन्दी का बोलबाला है।
जो मुख में लाना चाहता है तुमको,
उसके होठों पर ही, लग जाता ताला है।
क्यों उस पाखण्डी प्रतिद्वन्दी के आगे
अपनी छवि धूमिल किये हो तुम।
हे सत्य! .....
यदि आज भी तुम अपने
असली रूप में आ जाओ
अनेक हरिश्चन्द्र और गांधी,
तुम्हें अपने मन-मन्दिर में बसायेंगे;
और तुम्हारा ही आश्रय लेकर,
तुम्हारे प्रतिद्वन्दी को दूर भगाएंगे।
हे सत्य! कहीं खो न देना
आज के परिवेश में,
अपनी पहचान तुम।
हे सत्य! कहाँ छिपे हो तुम।

-पत्नी श्री हेमेन्द्र कुमार
एफ-11, फेज-6, आदर्श
एन्क्लेव, आयानगर, दिल्ली-47

विश्वव्यापी आर्यसमाज के समाचार
आर्यसमाज की आधिकारिक वेबसाइट पर
www.aryasmaj.com
अपनी संस्था की सूचनाएं भी अपलोड कर सकते हैं।
अथवा ईमेल से भेजें : thearyasamaj@gmail.com

## आर्यावर्त केसरी के आजीवन व संरक्षक सदस्य बनें

आदरणीय बन्धुओं! सप्रेम अभिवादन,

आर्यावर्त केसरी आपका अपना पत्र है, जो विश्वभर में वैदिक संस्कृति, राष्ट्रीय चिन्तन व आर्यत्व के प्रचार-प्रसार के लिए संकल्पबद्ध है। आर्यावर्त केसरी की संरक्षक सदस्यता सहयोग राशि रु० 3100/- तथा आजीवन सदस्यता हेतु सहयोग राशि रु० 1100/- है। कृपया अपनी सदस्यता सहयोग राशि 'आर्यावर्त केसरी' के नाम से भारतीय स्टेट बैंक की किसी भी शाखा में बचत खाता सं० 30404724002 अथवा सिंडीकेट बैंक की किसी भी शाखा में बचत खाता सं० 88222200014649 में सीधे जमा करा सकते हैं, जिसकी सूचना अपने पासपोर्ट साइज़ फोटो, नाम, पते व चलभाष सहित अविलम्ब हमें भेज दें। सहयोग राशि एकाउन्टपेयी चैक या धनादेश द्वारा भी भेजी जा सकती है। सभी मान्य संरक्षक सदस्यों व आजीवन सदस्यों के रंगीन चित्र व शुभ नाम प्रकाशित किये जाएंगे। इस प्रकाशन यज्ञ में आपकी सहयोग रूपी आहुति प्रार्थनीय है। धन्यवाद,

डॉ. अशोक कुमार आर्य, सम्पादक- आर्यावर्त केसरी, आर्यावर्त कॉलोनी, निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा ( उ.प्र. ), दूर. -05922-262033, चल.- 09758833783 / 08273236003

**आइये! आज ही आर्यावर्त केसरी के मिशन से जुड़िए...**

## आर्य गिरधारी महर्षि दयानन्द संस्थान का चुनाव सम्पन्न

**कोटद्वार ( सुरेन्द्रलाल आर्य )।** आर्य गिरधारी महर्षि दयानन्द संस्थान के द्विवार्षिक चुनाव में सुरेन्द्रलाल आर्य को लगातार पांचवी बार अध्यक्ष चुना गया। आचार्य धर्म शास्त्री सलाहकार एम्स, दिल्ली की अध्यक्षता में हुई सभा का संचालन सचिन वीरेन्द्र देवरानी ने किया।

इसी क्रम में वरिष्ठ उपाध्यक्ष- कै. प्रेमलाल खनतवाल, सचिव- वीरेन्द्र देवरानी, कोषाध्यक्ष- बच्चन सिंह गुसाई चुने गये। यह चुनाव आचार्य धर्म शास्त्री की देखरेख में सर्वसम्मति से हुआ। आर्य उपप्रतिनिधि सभा गढ़वाल आदि के प्रधान पदेन सदस्य होंगे।

### आर्यावर्त प्रकाशन अमरोहा द्वारा स्थापित

## सत्यार्थ प्रकाश प्रकाशन निधि के सहयोगी महानुभाव

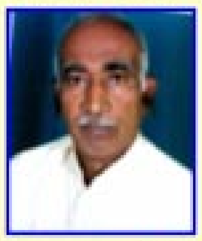
बाबूलाल पाटीदार
प्रधान

जमनालाल शर्मा
कोषाध्यक्ष

महेश सुमन
मंत्री

सुरेश चन्द्र गुजराती
मंत्री

**आर्य समाज, छोटी सदरी, जिला- प्रतापगढ़ ( राजस्थान ) की ओर से राशि- ११०००/- रुपये**

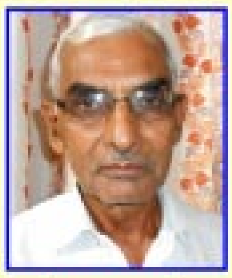
डॉ. सीताराम शर्मा 'बन्धु'
अमरोहा ( उ.प्र. )
राशि- ११००/- रुपये

**विशेष :** न्यूनतम एक हजार रुपये भेंट करने वाले महानुभावों के चित्र 'सत्यार्थ प्रकाश' तथा आर्यावर्त केसरी में प्रकाशित किये जाएंगे

**घर-घर पहुंचाएं सत्यार्थ प्रकाश**

धनराशि अग्रिम भेजना आवश्यक नहीं है, यदि आप चाहें तो यह राशि इस ग्रन्थ के प्रकाशन के बाद भी हमें भेज सकते हैं। आपकी घोषित धनराशि के अनुरूप उतनी ही प्रतियों में आपके चित्र व नाम प्रकाशित किये जाएंगे। धन्यवाद


## हकीम सैयद हुसैन नक़वी

**अलबारी दवाखाना**

क्या आप इनमें से किसी भयंकर रोग से पीड़ित हैं, तुरंत संपर्क करें

विशेषज्ञ :-

गुर्दा, कैंसर, गुप्त रोग एवं हृदय

नोट :- मस्तिष्क कैंसर रोगी न मिलें

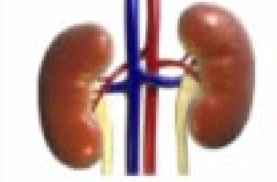

पता :- मोहल्ला लकड़ा, निकट सब्जी मंडी, अमरोहा-244221

मोबा. नं०- 09917358382

मायूस न हों! भरपूर वैवाहिक जीवन का आनन्द प्राप्त करने के लिए सदा प्रयोग करें मुग़ल-ए-आज़म कैप्सूल व क्रीम। हर मेडिकल स्टोर पर उपलब्ध है या डाक द्वारा मंगाएं।

**हाशमी दवाखाना, अमरोहा (उ.प्र.)**

मोबा. नं०- 09997161320, 09997161317

**आर्यावर्त केसरी**

संरक्षक
श्रीराम गुप्ता
प्रबन्ध सम्पादक- सुमन कुमार 'वैदिक', विनय प्रकाश आर्य, शिव कुमार आर्य
सह सम्पादक- पं. चन्द्रपाल 'यात्री'
समाचार सम्पादक- सत्यपाल मित्र, यतीन्द्र विद्यालंकार, रवित विश्नोई, डॉ. ब्रजेश चौहान
मुद्रण- फरमूद सिद्दीकी, इशरत अली
साहित्य सम्पादक- डॉ. बीना रुस्तगी
प्रधान सम्पादक
डॉ. अशोक कुमार आर्य

डॉ. अशोक कुमार आर्य-प्रकाशक, मुद्रक, व स्वामी द्वारा स्टार प्रिंटिंग प्रेस के लिए आर्यावर्त प्रिन्टर्स, अमरोहा से मुद्रित व कार्यालय-
आर्यावर्त केसरी
मुरादाबादी गेट, अमरोहा
उ.प्र. (भारत) -२४४२२१
से प्रकाशित एवम् प्रसारित।
☎:05922-262033, 9412139333 फैक्स : 262665
डॉ. अशोक कुमार आर्य
प्रधान सम्पादक
E-mai :
aryawart_kesari@rediffmail.com
aryawartkesari@gmail.com